सम्पादक
डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी
सहायक
मु0 गुफ़रान नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
फोन : 0522–2740406
फैक्स : 0522–2741221
E-mail : nadwa@sancharnet.in
nadwa@bsnl.in

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 30/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक) 50 युएस. डॉलर	

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
"सच्चा राही"
पता
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग
लखनऊ–226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ

जनवरी, 2018 वर्ष 16 अंक 11

नया साल या रब मुबारक हो सब को

नया साल या रब मुबारक हो सब को
सब अहले चमन को, सब अहले वतन को
खुदाया वतन से, जिहालत मिटा दे
करें नेकियां ऐसी आदत बना दे
हवा तू महब्बत की या रब चला दे
अदावत मिटा दे, अदावत मिटा दे
तरक्की की धुन में हर इक को लगा दे
ग़रीबी मिटा दे ग़रीबी मिटा दे
सभी बेटियों को तू आगे बढ़ा दे
हर इक इल्म नाफे तू उन को पढ़ा दे
न भूले कोई अपने ख़ालिक़ को या रब
रहे याद में अपने मालिक की या रब

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा खत्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। और मनीआर्डर कूपन पर अपना खरीदारी नम्बर अवश्य लिखें। अगर आपका फोन या मोबाइल हो तो उसका नम्बर भी लिखें।

विषय एक दृष्टि में

कुर्आन की शिक्षा	मौ0 बिलाल अब्दुल ह़यी हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	अमतुल्लाह तस्नीम	07
नया साल मुबारक हो	डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी	08
इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद	हज़रत मौ0 अबुल हसन अली नदवी रह0	10
रोहिंगिया मुसलमानों के साथ	हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी	13
आदर्श शासक	मौलाना अब्दुस्सलाम किदवाई नदवी	15
चार तबक़ात और इन्सानी	मौ0 डॉक्टर सईदुर्रहमान आजमी नदवी	17
बच्चों की तरबीयत	मौलाना जाफर मसऊद हसनी नदवी	21
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती ज़फ़र आलम नदवी	26
नया साल या रब मुबारक हो	इदारा	30
राष्ट्रीय गीत (पद्य)	अब्दुल रशीद सिद्दीक़ी नसीराबादी	31
औरंजेब की चवन्नी	जमाल अहमद नदवी	32
खबर की तहक़ीक़	ह0 मौ0 सै0 मुहम्मद राबे हसनी नदवी	34
ज़िन्दा रहना है तो मीरे	हजरत मौ0 अबुल हसन अली नदवी रह0	36
रोहंगिया मुसलमान अत्याचार	हुसैन अहमद	37
26 जनवरी (पद्य)	इदारा	41
उर्दू सीखिए	इदारा	42

क़ुर्आन की शिक्षा

—मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़यी हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-निसाः

अनुवाद–

और जब आप उनके बीच हों और उनके लिए नमाज़ खड़ी करें तो उनमें से एक गिरोह आपके साथ खड़ा हो और वे हथियार अपने साथ ले लें फिर जब वे सज्दा कर लें तो वे तुम्हारे पीछे चले जाएं और दूसरा गिरोह जिसने नमाज़ नहीं पढ़ी है वह आ जाए फिर वह आप के साथ नमाज़ पढ़े और वे भी अपने बचाव के सामान और हथियार साथ रखें, काफिर तो चाहते हैं कि तुम अपने हथियार और सामान से असावधान हो जाओ तो वह एक साथ अचानक तुम पर टूट पड़े(1) और तुम पर कोई पाप नहीं कि अगर तुम्हें बारिश से तकलीफ़ हो या तुम बीमार हो तो तुम अपने हथियार उतार रखो और अपने बचाव का सामान लिए रहो बेशक अल्लाह ने काफ़िरों के लिए अपमान जनक अज़ाब तैयार कर रखा है(2)(102) फिर जब नमाज़ पूरी कर लो तो खड़े और बैठे और लेटे अल्लाह को याद करते रहो फिर जब तुम्हें इत्मिनान हो जाए तो नमाज़ नियामानुसार पढ़ो, बेशक नमाज़ ईमान वालों पर निर्धारित समय पर फर्ज़ है(3)(103) और दुश्मन कौम का पीछा करने में हिम्मत मत हारना, अगर तुम्हें तकलीफ़ पहुंचती है तो जैसे तुम्हें तकलीफ़ पहुंचती है वैसे ही उन्हें भी पहुंचती है और तुम अल्लाह से वह आशा करते हो जो वे नहीं कर सकते और अल्लाह खूब जानने वाला बड़ी हिकमत वाला है(104) बेशक हमने आप पर ठीक—ठीक किताब उतार दी ताकि जैसा अल्लाह ने आपको रास्ता दिखाया उसके अनुसार आप लोगों में फ़ैसला करते रहें और ख़यानत (विश्वास घात) करने वालों के पक्षधर न हो जाएं(4)(105) और अल्लाह से माफ़ी मांगते रहिए, बेशक अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला बड़ा ही दयालु है(5)(106) और उन लोगों की ओर से बहस न कीजिए जो अपने मन में धोखा रखते हैं बेशक अल्लाह उसको पसंद नहीं करता जो धोखेबाज़ पापी हो(107) वे लोगों से शर्माते हैं और अल्लाह से उनको शर्म नहीं आती जब कि वह उस समय भी उनके साथ है जब वे रात को ऐसी बात का मश्वरा करते हैं(6) जो उसे पसंद नहीं और वे जो कुछ करते हैं वह सब अल्लाह के वश में है(108) हां तुम लोगों ने दुन्या में उनकी ओर से बहस कर भी ली तो क़यामत के दिन अल्लाह से कौन उनकी ओर से बहस करेगा या कौन उनका काम बनाने वाला

होगा[7](109) और जो भी बुराई करेगा या अपने साथ अन्याय करेगा फिर अल्लाह से माफ़ी चाहेगा तो वह अल्लाह को बड़ा माफ़ करने वाला बहुत ही दयालु पाएगा[8](110) और जो गुनाह कमाता है वह उसे अपने ही सिर लेता है और अल्लाह खूब जानने वाला बड़ी हिकमत वाला है(111) और जिसने खुद गलती या पाप किया फिर उसको किसी निर्दोष के सिर थोप दिया तो उसने आरोप और बड़ा गुनाह अपने ऊपर लाद लिया[9](112) और अगर आप पर अल्लाह का फ़ज़्ल (कृपा) और उसकी रहमत न होती तो उनके एक गिरोह का इरादा तो यह था कि वह आपको रास्ते ही से हटा दे हालांकि वे तो अपने आपको गुमराह कर रहे हैं और वे आपको कुछ भी नुकसान नहीं पहुंचा सकते और अल्लाह ने आप पर किताब व हिकमत उतारी और जो आप जानते न थे वह आपको सिखाया और आप पर तो अल्लाह का बड़ा ही फ़ज़्ल रहा है[10](113)

तफ़्सीर (व्याख्या):-

1. यह नमाज़–ए–ख़ौफ़ का बयान है, इस क्रम से पढ़ सकें तो पढ़ लें वरना जिस तरह अकेले, सवार हो कर, बैठ कर बन पड़े पढ़ लें और अगर यह भी संभव न हो तो कज़ा पढ़ें।

2. किसी कारण हथियार उतार दिये जाएं लेकिन सुरक्षा के साधन न छोड़े जाएं और सतर्क रहा जाए।

3. डर समाप्त हो जाए तो नमाज़ उसी ढंग से पढ़ी जाए जैसे शरीअ़त में बताया गया है नमाज़ के अलावा ज़िक्र ज़ियादा से ज़ियादा किया जाए।

4. बिश्र नामक एक व्यक्ति ने चोरी की, आटे की बोरी में छेद था उनको पता न चला अपने घर ले गया फिर एक यहूदी के यहां अमानत रख आया, निशान पर पहले वे खुद पकड़ा गया लेकिन अपने बरी होने की क़स्में खाने लगा और यहूदी का पता बता दिया, बोरी उसके यहां मिल गई तो उसने कहा कि मैंने अमानत के रूप में इसको रखा है, इधर बिश्र के बिरादरी वाले बनी उबैरिक़ उसके पक्षधर हो कर आ गए, हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से आ कर इतनी ज़ोरदार वकालत शुरु कर दी कि आप को शुब्हा होने लगा कि बिश्र बरी है, और चोरी यहूदी ने की है इस पर यह आयत उतरी और बिश्र की चोरी का परदा चाक कर दिया गया, जब उसको अपने राज़ फ़ाश होने का पता चला तो वह भाग कर मक्के के काफ़िरों से जा मिला और वहां कुफ़्र की हालत में बुरी मौत मरा।

5. चुंकि हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दिमाग़ में बात आई थी कि शायद यहूदी ही गलती पर हों आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के बुलन्द दर्जे को देखते हुए इस पर माफ़ी मांगने का आदेश दिया जा रहा है।

6. जब बात खुल गई तो हो सकता था कि अपनी दयालुता के कारण हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके लिए माफ़ी की दुआ करते

शेष पृष्ठ....14 पर

प्यारे नबी की प्यारी बातें

—अमतुल्लाह तस्नीम

नामहरम (अपरिचित) औरत के साथ अकेले में बैठने की हुरमतः–

अनुवादः और जब पैगम्बरों की बीवियों से कोई चीज मांगनी हो तो पर्दे के पीछे से मांगो।

(सूर–ए–अहज़ाबः7)

हज़रत उक़बा बिन आमिर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया नामहरम औरत के पास जाने से बचो, एक अंसारी ने अर्ज किया या रसूलुल्लाह सल्ल0 देवर के बारे में आप क्या फरमाते हैं, आप सल्ल0 ने फरमाया देवर मौत है।

(बुखारी मुस्लिम)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया तुम में से कोई शख्स किसी औरत के साथ तनहाई में न रहे महरम के अलावा। (बुखारी)

हज़रत बुरैदा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया मुजाहिदीन की औरतों की इज्जतें पीछे रह जाने वालों पर ऐसी ही हराम हैं जैसे उनकी माँ बहनें हराम हैं, पीछे रह जाने वालों में से कोई शख्स मुजाहिदीन के किसी घर की जिम्मेदारी ले फिर खयानत करे तो कयामत के दिन उसको खड़ा किया जायेगा और मुजाहिद को हक दिया जायेगा, बस वह उसके आमाल में से जो चाहे ले लेगा ताकि खुश हो जाये, फिर हुजूर सल्ल0 ने हमारी ओर मुतवज्जेह हो कर फरमाया तुम लोगों का क्या ख्याल है।

मर्दों की औरतों से और औरतों की मर्दों से मुशाबिहत करने की हुरमतः–

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने औरत नुमा मर्दों और मर्द नुमां औरतों पर लानत फरमाई है। एक रिवायत में है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने उन मर्दों पर लानत फरमाई है जो औरतों की मुशाबिहत करते हैं और उन औरतों पर लानत फरमाई है जो मर्दों की मुशाबिहत करती हैं। (बुखारी)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने उन मर्दों पर लानत फरमाई है जो औरतों का लिबास इख्तियार करते हैं और उन औरतों पर लानत फरमाई है जो मर्दों का लिबास पहनती हैं। (अबू दाऊद)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया दो प्रकार के लोग दोजखी हैं मैंने उनको देखा नहीं, एक तो वह लोग हैं जिन के साथ गऊ दम कोड़े हैं, उसी कोड़े से लोगों को मारते हैं, दूसरे वह औरतें हैं जो जाहिर में तो कपड़े पहने हैं मगर हकीकत में नंगी हैं, माइल करने वालियां और खुद माइल होने वालियां उनके सर बखती ऊँटों के झुके हुए कोहान के मिस्ल हैं ऐसी

शेष पृष्ठ....14 पर

नया साल मुबारक हो

—डॉ0 हारून रशीद सिद्दीक़ी

प्रिय पाठको नया साल मुबारक हो, एक शख्स ने दूसरे शख्स को नये साल की मुबारकबाद पेश की तो एक तीसरे शख्स ने टोका कि यह तो मसीहियों का नया साल है, एक चौथे इल्म वाले शख़्स ने कहा भाई अरबी सन का नया साल भी हमारा है, और मसीही नया साल भी हमारा है, क्या हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को हम अल्लाह का नबी नहीं कहते हैं, क्या पवित्र कुर्आन में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का ज़िक्र बार बार नहीं आया है? पस ईस्वी नये साल पर मुबारक बाद पेश करने को बुरा मत कहो, दिन व साल से तो सब का साबक़ा है, जो दिन मुबारक होगा या जो साल मुबारक होगा वह सबके लिए मुबारक होगा चाहे वह मुस्लिम हो या गैर मुस्लिम, लिहाजा नया साल चाहे जिस कलण्डर से तअल्लुक़ रखता हो, विक्रमी संवत से मुतअल्लिक हो या मसीही सन से, हिज्री सन से तअल्लुक़ रखता हो या किसी और सन से वह साल आएगा और जाएगा वह मुबारक होगा तो सब के लिए होगा ना मुबारक होगा तो सब के लिए, लिहाज़ा हम तो उसको मुबारक ही चाहेंगे उसका तअ़ल्लुक़ चाहे जिस कलण्डर से हो।

ईस्वी सन के नये साल का महत्व हमारे लिए और भी बढ़ जाता है कि ईस्वी सन के नये साल के पहले महीने जनवरी की 26 तारीख़ को हम गणतंत्र दिवस मनाते हैं और इसे खूब धूम से मनाते हैं कि सारे पर्व उस के पीछे रह जाते हैं, इसी 26 जनवरी को हमारा संविधान लिखित रूप से सम्पूर्ण हो कर प्रचलित हुआ। 26 जनवरी को पूरे मुल्क में जो धूम धाम रहती है शायद वैसी धूम धाम स्वतंत्रता दिवस के अतिरिक्त किसी और दिन देखने को नहीं मिलती।

हमारे संविधान की रचना में दूसरे बड़े नेताओं के साथ सब से अधिक योगदान बाबा साहब भीम राव अंबेडकर जी का है, अपितु पूरा संविधान उन्हीं की भाषा में और उन्हीं के कलम से है ऐसे अवसर पर हम को चाहिए कि हम केवल मुबारकबाद पर न रहें बल्कि कुछ रचनात्मक प्रतिज्ञायें लें।

हम बड़े पर्व के आरंभ में विशेष कर गणतंत्र दिवस 26 जनवरी को अपने देश के निर्माण के लिए संकल्प लें हमारी सरकार स्वच्छता अभियान चला रही है हम संकल्प लें कि स्वयं स्वच्छ रहेंगे आस पास को स्वच्छ रखेंगे और अपने देश को स्वच्छ बनाएंगे, एक मुसलमान तो स्वच्छ रहता ही है उस पर पांच समय की नमाज़ फर्ज़ है और नमाज़ के लिए शरीर का स्वच्छ होना उसके कपड़ों का स्वच्छ होना नमाज़ के स्थान का स्वच्छ होना

अनिवार्य है। स्वच्छता को ईमान का भाग बताया गया है, पवित्र कुर्आन में बताया गया है कि स्वच्छता प्रेमियों को अल्लाह प्रिय रखता है। मुसलमान तो पेशाब के पश्चात भी पेशाब निकलने की जगह को पानी या मिट्टी के ढेले आदि से साफ़ करता है जब कि हमारे वतनी भाईयों के अण्डर वियर पेशाब की दुर्गन्ध से लिप्त रहते हैं, अतः जो मुसलमान गन्दा रहता है वह इस्लामिक शिक्षाओं को नज़रअन्दाज़ करता है। हम प्रतिज्ञा लें कि हमारा कोई भाई बेकार न रहेगा। इस्लामिक शिक्षाओं में इसका भी बड़ा प्रबंध है अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक भीख मांगने वाले को देख कर उसके लिए एक कुलहाड़ी का प्रबन्ध करके उस को आदेश दिया था कि वह जंगल से लकड़ी काट कर लाए और उसे बेच कर अपनी रोज़ी चलाए, उस समय जंगल से सूखी लकड़ी काटने पर रोक न थी जब कि हमारे इस समय में जंगल से लकड़ी काटना मना है, बहर हाल हम कोशिश कर के बेकार रहने वालों को मनरेगा वगैरह में काम दिलाएं, नीज उनको रस्सी बनाने, रद्दी क़ाग़ज़ से लिफ़ाफे आदि बनाने का परामर्श दें, ऐसे बेकार रहने वालों को चाहिए कि वह कौशल विकास से सम्बंध स्थापित करके कोई हुनर सीख कर अपनी रोज़ी कमाएं।

हम इसका अहद करें कि जो बूढे–बूढियां या अपंग लोग जो काम नहीं कर सकते न उनको कोई सहारा देने वाला है, हम अपनी कमाई का कोई भाग उन पर खर्च कर के उन की मदद करेंगे, इस्लाम ने तो इस समस्या का समाधान ज़कात की अदायगी से किया है, परन्तु ज़कात केवल मुस्लिम मुहताजों का हक़ है, गैर मुस्लिम मुहताजों की मदद ज़कात के अतिरिक्त फण्ड से की जाए। इसका भी संकल्प लें कि हम अपने बच्चे बच्चियों को शिक्षा अवश्य दिलाएंगे अगर हमारी बीवी अनपढ़ है तो हम उसको पढ़ा कर रहेंगे, हमारे पड़ोस में अगर कोई भाई अनपढ़ है तो थोड़ा समय निकाल कर किसी उचित समय उसे लिखना पढ़ना अवश्य सिखाएंगे, फिर उससे कहेंगे अगर तुम्हारी पत्नी अनपढ़ है तो तुम उसे लिखना पढ़ना अवश्य सिखाओ यह मुहिम इस प्रकार चलाना चाहिए कि हमारे घर परिवार महल्ला या गांव में कोई अनपढ़ न रहे।

महल्ले के बड़े–बूढ़े विशेष कर शिक्षित जनों से अनुरोध है कि वह महल्ले के नवयुवकों से संबंध रखें उनको प्यार से प्रेम से अपनाए रखें जवानी दीवानी होती है जवानों को दीवानगी से बचाने का काम महल्ले के बड़े बूढ़े ही कर सकते हैं उनको तरगीब दें प्रेरित करें कि महल्ले में वह एक दो बार एकत्र हुआ करें दोपहर में या शाम में एकत्र हों किसी की चौपाल में या किसी भी उचित स्थान पर उनको कोई बड़ा बूढ़ा शिक्षित व्यक्ति

शेष पृष्ठ....12 पर

इस्लाम के तीन बुन्यादी अक़ायद

–हज़रत मौलाना अबुल हसन अली नदवी (रह0) — अनुवादकः मुहम्मद हसन अंसारी

तौहीद (ऐकेश्वरवाद) तथा शिर्क (बहुदेववाद) की वास्तविकता और अरब के मुश्रिकीन (बहुदेववादी):–

इबादत (उपासना) का आधार अक़ीदों (विश्वासों) तथा ईमान (आस्था) के सही रखने पर है जिसके अकीदे व ईमान में गड़बड़ी हो उसकी न कोई इबादत मान्य है और न कोई कर्म ठीक माना जाएगा और जिसका अक़ीदा व ईमान ठीक हो उसका थोड़ा काम भी बहुत है, इसलिए हर व्यक्ति को इसकी पूरी कोशिश करनी चाहिए कि उसका ईमान व अक़ीदा ठीक हो और सही ईमान व अकीदे की प्राप्ति और उस पर संतुष्टि, उसका कार्य उद्देश्य तथा अंतिम मनोकामना हो, उसको अनिवार्य व अद्वितीय समझे और इसमें क्षण भर भी देर न करे।

स्वच्छ मानसिकता, गहनता व सत्य की खोज की भावना के साथ पवित्र कुर्आन के अध्ययन से यह बात स्पष्ट हो चुकी है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम (संदेष्टा) के युग के काफिर अपने झूठे उपास्यों को अल्लाह का सर्वथा समकक्ष व समान प्रतिष्ठित नहीं समझते थे, वरन् वे यह स्वीकार करते थे कि वे सृष्टि व बन्दे हैं, उनका कभी यह विश्वास न था कि उनके उपास्य क्षमता व शक्ति में किसी प्रकार कम नहीं और वे अल्लाह के साथ एक ही पड़ले में हैं पवित्र कुर्आन में जगह जगह इसकी गवाहियां मौजूद हैं, इस अवसर पर सूरः अल्मोमिनून की निम्न लिखित आयतें पर्याप्त होंगी।

अनुवादः *''ऐ नबी आप पूछिये! धरती और उसकी सारी वस्तुएं किसकी हैं। यदि तुम जानते हो तो बताओ! शीघ्र ही उत्तर देंगे कि सब कुछ अल्लाह का है, आप कहिए। फिर तुम सोचते नहीं। आप पूछिए सातों आसमानों और महान सिंहासन का मालिक कौन है? वे उत्तर देंगे कि अल्लाह। आप कहिए कि तुम डरते नहीं? आप पूछिए हर वस्तु की सत्ता किसके हाथ में है? वही शरण देता है और उसके विरुद्ध कोई शरण नहीं दे सकता, यदि तुम्हें ज्ञान है, उत्तर देंगे अल्लाह। आप कहिए कि फिर तुम पर कहां का जादू चल गया है? (कि ऐसे अल्लाह को छोड़ कर दूसरों की पूजा करते हो)*

(सूरःअल्मोमिनूनः 84–86)

उनका कुफ़्र व शिर्क (नास्तिकता व बहुदेववाद) केवल यह था कि वे अपने झूठे पूज्यों को पुकारते तथा उनकी दुहाई देते, उन पर चढ़ावा चढ़ाते तथा उनके नाम पर बली देते व उनको अल्लाह के वहां सिफारिशी, संकट मोचन तथा काम बनाने वाला समझते थे, अतः हर वह व्यक्ति जो किसी के साथ वही मामला करे जो काफिर लोग अपने झूठे उपास्यों के साथ करते थे तो यद्यपि वह इसको स्वीकार

करे कि वह एक सृष्टा तथा अल्लाह का बन्दा है, उसमें तथा जाहिलियत– युग (इस्लाम पूर्व युग) के एक बड़े मूर्ति पूजक में मुश्रिक होने के विषय में कोई अन्तर नहीं होगा।

हजरत शाह वली उल्लाह साहब रहमतुल्लाहि अलैहि लिखते हैं–

ज्ञात हो कि तौहीद के चार दर्जे हैं–

1). केवल अल्लाह को ''वाजिबुल वजूद (जिस का अस्तित्व कभी समाप्त न हो) करार देना अतः कोई और वाजिबुल वजूद नहीं।

2). अर्श (सिंहासन) आकाश व धरती और सारी मौजूद वस्तुओं का सृजक अल्लाह को समझना। (इसी को तौहीदे रुबूबियत कहा जाता है)।

यह दो दर्जे वे हैं जिन से आसमानी ग्रंथों ने बहस की आवश्यकता नहीं समझी और न अरब के मुश्रिकों तथा यहूदियों व ईसाइयों को इस विषय में मतभेद व इनकार था वरन् पवित्र कुर्आन इसका स्पष्टीकरण करता है कि यह दोनों दर्जे उनके वहां सर्वमान्य हैं।

3). आकाश व धरती के और जो कुछ इनके मध्य है उसको केवल अल्लाह के लिए विशेष समझना।

4). अल्लाह के अलावा किसी को इबादत का पात्र न मानना।

यह दोनों दर्जे स्वाभाविक रूप से परस्पर सम्बन्ध रखते हैं इनका घनिष्ट और निकटतम सम्बन्ध है, इन्हीं दोनों दर्जों से पवित्र कुर्आन ने बहस की है तथा काफिरों के शक संदेहों का पर्याप्त उत्तर दिया है।

(हुज्जतुल्लाहिल बलिग़ा 1/59–60)

इससे यह ज्ञात हुआ कि शिर्क का अर्थ केवल यह नहीं कि किसी को अल्लाह का समकक्ष व समान करार दिया जाए, बल्कि शिर्क की वास्तविकता यह है कि आदमी किसी के साथ वह काम अथवा वह मामला करे जो अल्लाह तआला ने अपनी श्रेष्ठ व उच्च ज़ात के साथ खास कर दिया है और जिसको बन्दगी की पहचान बनाया है, जैसे किसी के सामने सजदा करना किसी के नाम की बली देना या मन्नत मानना, विपदा व दुःख में किसी से सहायता मांगना और यह समझना कि वह हर स्थान पर हाजिर व नाजिर है और उसको ब्रह्माण्ड की व्यवस्था चलाने वाला समझना, यह सारी वह वस्तुएं हैं जिन से शिर्क सिद्ध होता है, और मनुष्य इसके करने से मुश्रिक हो जाता है चाहे उसका विश्वास ही क्यों न हो कि वह इन्सान, फरिश्ता अथवा जिन्न जिसके सामने वह सजदा कर रहा है या जिसके नाम की बलि दे रहा है या मन्नते मान रहा है और जिससे सहायता मांग रहा है, वे अल्लाह तआला से बहुत कम प्रतिष्ठित तथा छोटी पदवी वाले हैं और चाहे यह मानता हो कि अल्लाह ही सृजक है और यह उसका बन्दा और सृष्टि है, इस विषय में नबी (संदेष्टा) वली (अल्लाह के प्रिय) जिन्न शैतान भूत प्रेत

सब बराब हैं, इनमें से किसी के साथ भी जो व्यवहार व मामला करेगा वह मुश्रिक करार दिया जाएगा और यही कारण है कि अल्लाह तआला उन यहूदियों व ईसाइयों को जिन्होंने अपने राहिबों, पादरियों तथा पुरोहितों के विषय में इस प्रकार अत्यधिक प्रशंसा व बढ़ा–चढ़ा कर व्याख्यान का रास्त अपनाया जिस प्रकार मुश्रिकों ने अपने झूठे पूज्यों के विषय में उन्हीं लक्षणों व नामों से याद किया है जिन नामों से मूर्ति पूजकों व मश्रिकों को याद किया है और उन अत्याधिक प्रशंसा करने वालों व सत्य मार्ग से हटने वालों से उसी प्रकार अपना कोप व क्रोध व्यक्ति किया है जिस प्रकार अत्यधिक 'मुश्रिकों पर, अल्लाह तआला का कथन है:–

अनुवादः *''अल्लाह के अतिरिक्त अपने आलिमों और दुरवेशों और मरयम अलैहिस्सलाम के पुत्र मसीह अलैहिस्सलाम को अपना रब बना लिया जबकि उनको केवल यह आदेश था कि एक मात्र अल्लाह के अतिरिक्त किसी की इबादत न करें, उसके अतिरिक्त कोई इबादत के योग्य नहीं अल्लाह उनके शिर्क से पाक है।*

(सूरः अत्तौबा–31)

..... जारी.....

❖❖❖

नया साल मुबारक.....

संबोधित करे उनको भली बातें बताए उन से प्रण ले कि वह तमाम बुरे कामों से बचेंगे हर प्रकार के नशे से दूर रहेंगे, भलाई के कामों को अपनाएगें तमाम ग़लत कामों से दूर रहेंगे झूठ न बोलेंगे किसी को धोखा न देंगे, किसी की बहन बेटी पर बुरी नज़र न डालेंगे, बे सहारा लोगों की मदद करेंगे आदि, अगर महीने में एक दो बार इस तरह की गोष्ठियां होती रहेंगी तो नवयुवक सुधरे रहेंगे, इन गोष्ठियों में हिन्दू मुस्लिम का अंतर कदापि न हो यदि महल्ले में मिली जुली आबादी है तो सब गोष्ठियों में भाग लें, और बूढे लोग नवयुवकों को प्रेरित करें कि वह भी गोष्ठी को संबोधित करें अगर महल्ले में कोई नवयुवक अनपढ़ हो तो इस गोष्ठी में उसको समझा कर उसको पढ़ने पर तैयार करें और उसकी पढ़ाई का प्रबंध करें यह बात हम पीछे लिख आए हैं।

मुस्लिम नवजवानों से अनुरोध है कि वह किसी आलिम से अवश्य संबंध रखें, अपितु संभव हो तो किसी जमाअत से तअल्लुक़ रखें जैसे इस्लामी जमाअ़त या तब्लीगी जमाअत, जो नवयुवक तब्लीगी जमाअत से जुड़ जाते हैं वह और उनका परिवार पापों अपराधों से दूर रहता है, नये साल के मुबारक बाद से कहीं अधिक आवश्यक यह बातें हैं जो प्रस्तुत की गईं।

अल्लाह तआला हमारे नवजवानों को शुद्ध मार्ग पर चलाए, अपने वतन को आगे बढ़ाने में भाग लेने का सामर्थ्य दे। और हमारे नवयुवकों को उग्रवाद तथा आतंकवाद आदि से सुरक्षित रखे।

आमीन।

❖❖❖

रोहिंगिया मुसलमानों के साथ हमदर्दी की ज़रूरत

—हज़रत मौलाना सय्यद राबे हसनी नदवी —हिन्दी लिपिः उबैदुल्लाह सिद्दीक़ी

रोहिंगिया मुसलमानों के साथ बरमा में जुल्म व सफ़्फ़ाकी के जो हालात पेश आ रहे हैं उनको देखते हुए इनसानी जज़्बा रखने वाले शख्स का तकलीफ महसूस करना और उस जुल्म व सफ्फ़ाकी को रोकने के लिए आवाज़ बुलन्द करना, बल्कि अपने असरात को इस्तेमाल करना बिल्कुल फित्री तक़ाज़ा है और अलहम्दुलिल्लाह इसके लिए हर चहार तरफ से आवाज़ उठाई जा रही है, इनमें हमारे मुल्क के मुसलमान और ग़ैर मुस्लिम भी हैं और बाज़ इस्लामी मुल्क तो अपने हुकूमती असरात से भी भरपूर काम ले रहे हैं, इसमें हमारे मुल्क को भी अपनी इन्सानी हमदर्दी का सुबूत देना चाहिए और बर्मा हुकूमत पर यह दबाव डालना चाहिए कि वह उन मज़लूमों को ग़ैर शहरी का शुबहा दे कर मुल्क से निकालने और उनको मारने और उनकी बस्तियों में आग लगा देने के सख़्त ज़ालिमाना अमल को रोकें और खास तौर पर जबकि दुन्या के मुतअ़द्दिद मुल्कों में बाहर के लोगों की खासी तअ़दाद वहां के शहरी हैं। मसलन अमरीका में, कनाडा में, आस्ट्रेलिया में और जुनूबी अफ्रीका, बर्तानिया में दूसरे मुल्कों के लोगों की खासी तअ़दाद पाई जाती है और वहां उनके साथ हमदर्दाना रवय्या इख़्तियार किया जाता है। और कहीं जुल्म हो रहा हो तो आलमी मीडिया भी हमदर्दी करता है और क़त्ल और इलाक़े की बर्बादी तो बहुत सख़्त ज़ियादती की बात है।

साबिक़ जमाने में हुकूमत का निज़ाम बादशाही होता था और उसके मातहत उसकी क़ौम उसी के मज़हब या फिर्के की होती थी उसमें बादशाह जो चाहे वह करता और कर सकता था, लेकिन दुन्या में अब जमहूरियत और सबके साथ मसावात का निज़ाम है और उनका मिज़ाज बैनल अक़्वामियत का हो गया है और उसमें अपने और ग़ैर तसव्वुर को अच्छा नहीं समझा जाता, चुनांचे दुन्या के बड़े मुल्कों के शहरियों में इश्तिराक और यकजिहती पाई जाती है जो इंसानियत की क़दरों के मुताबिक़ है। जुल्म जहां भी हो उसको रोकना और मना करना ज़रूरी है इसकी ज़रूरत हर एक मुल्क और क़ौम को हो सकती है। हर जगह इंसानी आबादी के असनाफ मुतअद्दिद हो सकते हैं। अकसरीयत और अकल्लीयत दोनों होती हैं। लिहाजा इंसानी मसावात और हमदर्दी का तरीक़ा सब को इख़्तियार करना चाहिए।

लिहाज़ा पड़ोसी मुल्कों को इंसानी हमदर्दी के दायरे में बर्मा में हो रहे जुल्म को रोकना चाहिए, ये खुशी की बात है कि इस मौक़े पर आलमी सतह पर मज़म्मत और एहतिजाज किया गया है, यह हम सबका फरीज़ा है। दुआ है, रोहिंगियाई मुसलमानों को इस जुल्म व बर्बरीयत से जल्द नजात मिले। आमीन।

(तामीरे हयात 10 अक्तूबर 2017 से ग्रहीत)

❖❖❖

प्यारे नबी की प्यारी.....

औरतें न जन्नत में जायेंगी और न उसकी खुशबू पायेंगी और उसकी खुशबू बहुत दूर से मिलती है। (मुस्लिम)

शैतान की मुशाबिहत करनाः–

हज़रत जाबिर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया बायें हाथ से न खाओ बायें हाथ से शैतान खाता है। (मुस्लिम)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया तुम लोग बायें हाथ से खाया पिया न करो, बायें हाथ से शैतान खाता पीता है। (मुस्लिम)

हज़रत जाबिर रज़ि0 से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्ल0 ने फरमाया यहूद और नसारा खिजाब नहीं करते तुम खिजाब किया करो (मेंहदी का खिजाब सुन्नत है जो खिजाब बालों को काला कर दे वह ठीक नहीं) ताकि उनकी मुखालफत हो।

(बुखारी–मुस्लिम)

बाल काला करने की मुमानियतः–

हज़रत जाबिर रज़ि0 से रिवायत है कि फत्हे मक्का के दिन अबू कुहाफा (हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि0 के वालिद) लाये गये, उनके सर और दाढ़ी के बाल सुगामा (एक सफेद रंग का पेड़ है बर्फ की तरह सफेद) की तरह थे, हुजूर सल्ल0 ने फरमाया इन को रंग दो मगर काला न करो।

(मुस्लिम)

–प्रस्तुति–

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

कुर्आन की शिक्षा.....

तो कह दिया गया कि इन नालायक़ों के बारे में क्यों अल्लाह से ज़ोर दे कर क्षमा चाहते हो ये तो रातों में छिप–छिप कर अवैध मश्वरे करते हैं।

7. इसमें चोर की क़ौम और उसके पक्षधरों से संबोधन है।

8. अत्याचार और अन्याय करने वालों के पक्ष लेने से उन अत्याचरियों को कुछ लाभ नहीं उनको चाहिए कि तौबा करें और माफ़ी मांगे।

9. पाप दोहरा होगा चोरी खुद की और आरोप दूसरे के सिर मढ़ा।

10. चोर के पक्षधरों ने इस ढंग से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बात की कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भी उनकी सच्चाई का विचार होने लगा और लगता था कि वे अपने पक्ष में फैसला करा लेंगे लेकिन आयत उतर आई और सत्य सामने आ गया और यह पैग़म्बर की विशेषता है कि वह कभी ग़लत राय पर क़ायम नहीं रह सकता।

–प्रस्तुति–

जमाल अहमद नदवी सुलतानपुरी

आदर्श शासक

—मौलाना अब्दुस्सलाम क़िदवाई नदवी

—अनुवादः अतहर हुसैन

पहले ख़लीफा

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि0:–

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि0 का शासनकाल है। हुकूमत के उत्तरदायित्व को संभालना बहुत कठिन है। एक ओर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के स्वर्गवास हो जाने से वही (ईश्वरीय आदेश) का क्रम टूट चुका है और धरती वाले आसमानी पथ–प्रदर्शन से वंचित हो चुके हैं, दूसरी ओर अरब में धर्म परिवर्तन का शोर है तथा इस्लामी हुकूमत के विरोध का ज़ोर है। ज़कात की अदायगी से इन्कार किया जाता है, तीसरी ओर रूमी और ईरानी सम्राट, अरब को नष्ट भ्रष्ट करने की योजनाएं बना रहे हैं, परन्तु ऐसी नाजुक तथा संकटकालीन अवस्था में भी शासन के कठिन उत्तरदायित्व के साथ यदि कोई धुन है तो वह है कि जनता की सेवा।

एक एलानः–

हज़रत अबूबक्र रज़ि0 ने ख़लीफा हो जाने के बाद जो व्याख्यान दिया, उसमें इसी संकल्प का प्रदर्शन किया है कि ख़िलाफ़त आदर, सम्मान, सुख तथा आनन्द का साधन नहीं बनने पायेगी, बल्कि इसके द्वारा जनता की सेवा की जायेगी। आपने कहा–

''लोगो! मैं तुम पर शासक नियुक्त किया गया हूं, यद्यपि मैं तुम से अच्छा नहीं हूं। यदि मैं भलाई का काम करूं तो मेरी सहायता करो और अगर बुराई की ओर बढ़ूं तो मुझे ठीक कर दो। खुदा ने चाहा तो तुम में से निर्बल व्यक्ति भी मेरे नज़दीक बलवान होगा, यहां तक कि मैं उसे उसका अधिकार दिला दूं और तुम्हारा बलवान मेरी दृष्टि में निर्बल होगा, यहां तक कि मैं उससे दूसरों को अधिकार दिला दूं। जब तक मैं खुदा और उसके रसूल के आदेशों का पालन करूं तो मेरा कहा मानना, परन्तु जब खुदा और उसके रसूल की अवज्ञा करूं, तो तुम पर मेरी आज्ञा का पालन करना अनिवार्य नहीं है''।

जन सेवा की यह भावना हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि0 के स्वभाव में रच बस चुकी थी। वह पहले ही से निर्धनों तथा कमज़ोरों की सहायता किया करते थे दुखियों तथा पीड़ितजनों को सीने से लगाते और मुसाफ़िरों का सत्कार करते थें दुश्मन भी उनके गुणों की सराहना करते थे।

राज कर्मचारियों को आदेशः–

राजकर्मचारियों को भी यही आदेश देते थे कि वह अपने अधीनस्थ तथा प्रजा के साथ सद्व्यवहार करें और अधिकार को भोग–विलास और आदर तथा सम्मान का साधन बनाने के बजाय जनसेवा का शुभ अवसर समझें, उनका आदेश था किः–

''प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष प्रत्येक अवस्था में अल्लाह से डरते रहो, जो अल्लाह से डरता है अल्लाह उसके गुनाह क्षमा कर देता है और उसकी नेकियों में वृद्धि कर देता है। अल्लाह के बन्दों के साथ भलाई करो, अपने

शासन–क्षेत्र में पक्षपात तथा भेद–भाव से दूर रहो। अपने प्रभुत्व से निकट सम्बन्धियों को दूसरों की अपेक्षा अधिक लाभ पहुंचाने का प्रयत्न न करो, इससे बहुत सावधान रहने की आवश्यकता है। अपने अधीनों के दुःख–दर्द में सम्मिलित रहो, ऐसा न हो कि वे किसी आपत्ति में हों और तुम मज़े कर रहे हो।''

एक अनुपम घटनाः–

वह बच्चों तक का दिल तोड़ना गवारा न करते थे। ख़िलाफ़त से पूर्व आप किसी बूढ़ी औरत की बकरी दुह दिया करते थे। ख़लीफ़ा हो जाने के बाद एक दिन उसके घर के सामने से गुज़रे तो उसकी छोटी बच्ची बाहर खेल रही थी। उसने जो आपको देखा तो हंसते हुए कहने लगी–

''यह अब ख़लीफ़ा हो गए हैं, अब यह हमारी बकरी नहीं दुहेंगे।'' यह शब्द हज़रत सिद्दीक़ के कानों में पड़े, तो आपने कहा ''नहीं–नहीं, मैं अब भी तुम्हारी बकरी दुहा करूंगा'' यह केवल शब्द न थे बल्कि इस कथन पर ऐसे जमे रहे कि अपने शासनकाल में नित्य उसकी बकरी दुहते रहे।

सेवा भावः–

मदीना मुनव्वरा में एक बूढ़ी अन्धी महिला रहती थी और हज़रत उमर रज़ि0 उसकी दयनीय दशा पर तरस खा कर नित्य प्रातःकाल उसके घर जाते और उसके आवश्यक कार्य कर दिया करते थे। कुछ दिनों बाद उन्हें ऐसा अनुभव हुआ कि कोई अन्य व्यक्ति उनसे भी पहले आकर उस गरीब औरत का कार्य कर जाता है। हज़रत उमर रज़ि0 को चिन्ता हुई कि उस व्यक्ति का पता लगाएं, अतः एक दिन रात रहे आप आए और किसी कोने में छिप कर बैठ गये। कुछ समय बाद उन्हें किसी के आने की आहट मालूम हुई, हज़रत उमर रिज़0 ने ध्यानपूर्वक देखा तो मालूम हुआ कि यह हज़रत अबूबक्र रज़ि0 हैं। जब वह कार्य समाप्त करके चले तो हज़रत उमर रिज़0 उनके पास आये और श्रद्धापूर्वक कहने लगे ''ऐ प्यारे रसूल के खलीफ़ा! आप सेवा करने में आगे आगे रहते हैं।''

निःस्वार्थताः–

सेवा की इस उग्र भावना के साथ निःस्वार्थ तथा निरीहता की यह दशा थी कि अपने गुज़ारे के लिए वेतन लेना भी स्वीकार न करते थे। खिलाफ़त के बाद लोगों के अचरज की सीमा न रही जब उन्होंने देखा कि अब भी पीठ पर कपड़ों का गट्ठा लदा है और बाज़ार से आ जा रहे हैं तथा क्रय– विक्रय में लगे हैं। यही व्यापार उनके गुज़ारे का साधन था। परन्तु दिन प्रतिदिन जब शासन का भार बढ़ने लगा तो लोगों ने आग्रह किया कि अब निजी व्यवसाय की कोई गुंजाइश नहीं, ऐसा न हो कि इसमें व्यवस्तता जनता की देख रेख से अचेत कर दे अन्ततः जनता के हितार्थ गुज़ारे के लिए थोड़ी सी राशि स्वीकार करनी पड़ी। इस समय आपने कहा–

'मेरी क़ौम भली–भांति जानती है कि मेरा व्यवसाय मेरे परिवार के लिए पर्याप्त था, परन्तु अब जब मैं मुसलमानों के काम में पूर्णतयः लगा हुआ हूं तो मेरा परिवार आवश्यकतानुसार उनके धन से खायेगा और उनका कार्य करेगा।''

चार तबक़्क़ात और इन्सानी ज़िन्दगी पर उनके असरात (चार श्रेणियां और मानव जीवन पर उनके प्रभाव)

—मौलाना डॉ0 सईदुर्रहमान आज़मी नदवी

—हिन्दी लिपिः हुसैन अहमद

आज मुसलमानों को दीनी और एअ़तिक़ादी बेदारी (विश्वासनीय जागरूकता) की सख्त जरूरत है, इस वक्त उन की उमूमी तादाद एक हजार पांच सौ मिलयन से अधिक है, उनके पास आलमी तन्जीमें भी हैं और बैनल अक़्वामी (अंतर्राष्ट्रीय) यूनीवर्सिटियां भी, आलमी बिरादरी में उनका एक मुक़ाम है, और उनको वहां की रुक्नीयत भी हासिल है, वह फित्री वसाइल व जखाइर से माला माल भी हैं और वसीअ़ जुगराफियाई रक़्बा भी उनके पास है, उनकी एक बड़ी तादाद तालीम याफ्ता भी है और उलूम व मआरिफ में मुम्ताज़ भी और वह मुआशरती और हुकूमती फैसलों में अहम और तन्क़ीदी राय भी रखते हैं।

इसी तरह उनके पास ऐसे उलमाए इस्लाम और मुस्लिहीने कौम व मिल्लत भी हैं, जो हकीकते इस्लाम की तरजुमानी करते हैं और अच्छी तर्बीयत से आरास्ता होने और इन्सानी जिन्दगी को इल्म व हिक्मत के क़ालिब में ढालने की कोशिश करते हैं और पूरी उम्मत को एक जान दो कालिब होने की तल्क़ीन करते हैं, क्योंकि यह उम्मत जिन्दगी और मुआशरा के हर शोबे में एअ़तिदाल की नुमाइन्दा है, और शर अंगेज़ अफराद के खिलाफ सीसा पिलाई हुई दीवार है, अल्लाह तआला का इरशाद है, अनुवादः ''और इसी तरह हम ने तुम को एक मो़तदिल उम्मत बनाया, ताकि तुम लोगों पर गवाह बनो और रसूल तुम्हारे ऊपर गवाह हों''। (अलबक़राः 143)

लेकिन इस वक़्त का अलमीया (दुखांत) यह है कि उम्मते मुस्लिमा और उसके अफराद न एक राय रखते हैं, और न एक सफ में मुत्तहिद हैं, बल्कि हक़ीकते हाल यह है कि वह पहले से ही मुख्तलिफ अन्वा व अ़स्नाफ में मुनक़सिम हैं, और हालिया वाकिअ़ात के तनाजुर में मुसलमानों में एक सिन्फ और पैदा हो गई है, वह खान्मा बरबाद अफराद की है, इसका सिलसिला खास तौर से खूंरेज़ वाक़िआत और ज़ालिमाना तशद्दुद के बाद उन की नस्लकुशी के जरीये शुरु हुआ। ऐसा महसूस होता है कि मुसलमानों के खिलाफ कोई खास प्लानिंग चल रही हो, वह मुसलमानों की वहदत को पारा पारा करना चाहते हैं और उनको जानवरों से भी ज़ियादा बे हैसियत करना चाहते हैं, ताकि मुसलमान किसी इन्सानी बुलन्दी को न हासिल कर सकें, और उनकी इज्तिमाई नस्ल कुशी हो सके और दीने इस्लाम और उस की बुन्यादी तालीमात

से उन को महरूम कर दिया जाए, उसके लिए नये नये साजिशी तरीक़े इस्तेमाल किए जा रहे हैं, कभी डरा धमका कर और कभी उनका इक्तिसादी व मुआशरती बाईकाट कर के, इसलिए मुस्लिम मुआ़शरे में मुतअ़दिद किस्म के अफराद हैं हम तमाम मुसलमानों को चार तबकात में तक्सीम कर सकते हैं–

1. पहला तबक़ा उन उलमा व दुआ़त (धर्म प्रचारकों) और मुस्लिहीन का है जो लोगों को सीरत व किरदार की रोशनी में इस्लाम की दावत देते हैं, उसकी सब से उम्दा मिसाल सहा–बए–किराम रज़ि0 हैं जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रास्ते पर चले, और हर छोटी बड़ी चीज़ में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े को इख्तियार किया कुर्आन में उन्हीं लोगों के मुतअल्लिक़ आया है।

अनुवादः– "तुम उन को रुकुअ़ व सज्दे में देखोगे, वह अल्लाह का फ़ज़्ल और उस की खुशनूदी के तालिब हैं, उनकी पेशानी पर सज्दे के असरात नज़र आते हैं"।

(अलफत्हः 29)

उनकी ज़िन्दगी ईमान व इख्लिास, तवक्कुल व परहेजगारी, सब्र व शुक्र, अदल व हिकमत जूद व सखा, हिल्म व बुर्दबारी, अ़फ़्व व दरगुज़र, तवाज़ोअ़ व इन्किसारी, इसार व कुर्बानी, उख्वूवत व महब्बत, जुहद व क़नाअ़त हर किस्म के हुकूक अदा करने, हुस्ने मुआ़मलात, भलाई की वसीयत करने, और हुस्ने जन्न रखने, मसावात व गमख्वारी, नसीहत व अमानत की सच्ची आईनादार थी। इसी तरह की तमाम ईमानी सिफात मुसलमानों के उस अहले इल्म व दीन के तबक़े में पाई जाती थी, वह अल्लाह वाले थे, और लोगों को ईमान बिल्लाहि वर्रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िन्दगी सिखाते थे, उनके मराकिज़ मजालिस सीखने वाले मुसलमानों से भरे होते थे, वह उन से दीन पर मुकम्मल अमल करने पर बैअ़त करते थे, अल्लाह तआ़ला ने हर ज़मान व मकान में उन की मुकम्मल हिफाज़त फरमाई है, उनकी सीरतें हमारे सामने हैं।

2. दूसरा तबका उन उलमाए दीन का है, जो तालीम व तरबीयत के रास्ते से अल्लाह के पैग़ाम को लोगों तक पहुचाने का एहतिमाम करते हैं, वह उलमाए दीन के नाम से मशहूर हैं, लोगों को ज़िन्दगी की हक़ीक़त और इस दुन्या में उसका मक्सदे तख्लीक़ बयान करते हैं और उखरवी जिन्दगी इख्तियार करने की तल्कीन करते हैं, बेशक उलमा व मुअ़ल्लिमीन और तालीम व तरबीयत के मैदान में सरगर्मे अमल और अल्लाह की दावत को फैलाने वाला यह तबक़ा अल्लाह का महबूब होता है, और अल्लाह ने इस तबके को वारिसीने अंबिया का मुक़ाम अता फरमाया है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "उलमा अंबिया के वारिस हैं, और अंबिया दीनार व दिरहम का वारिस नहीं बनाते, बल्कि इल्म का वारिस बनाते हैं, जिसने उसको हासिल किया, उसने बड़ी चीज़ हासिल की"।

तालीम व तरबीयत के मराकिज़ इस तबके की तवज्जुह का मरकज होते हैं वह आला मेयार पर इल्म व मारिफत के मदारिस और इस्लामी यूनीवर्सिटियां काइम करने में कोई कसर नहीं छोड़ते हैं, उसके तालीमी व तरबीयती निसाब को पढ़ कर बहुत से ऐसे अफराद तैयार होते हैं जो एतदाल और जामईयत का नमूना होते हैं, वह तालीम व तरबीयत की जिम्मेदारी संभालते हैं, तमाम मुआ़मलात व हालात में इल्मे दीन को तवाजुन के साथ फैलाते हैं। उसके बावजूद इस्लाम मुखालिफ ताकतें मुआश–रए–इन्सानी से उन उलमाए रब्बानीयीन की कूवत व तासीर को खत्म करना चाहती हैं और मुआशरे में उनके असर व रुसूख़ को कमज़ोर करने में कोई कसर नहीं छोड़ती, वह तो सिर्फ इस से खुश होती हैं कि नवजवान मुसलमान तालीम व तरबीयत से यक्सर खाली हों,क्योंकि उन्हें यह मालूम है कि अगर मुसलमान इल्मी हथियार से खाली होंगे तो उनकी ईमानी हैबत को खत्म करना और उस की कूवत व तासीर को जाइल करना (जिस से वह हर मौके पर दूसरे से मुम्ताज़ होते हैं) और इस्लाम और उसकी तालीमात के खिलाफ रुजहानात को तब्दील करना आसान हो जाएगा। उन उलमा का मिशन है कि वह तमाम मुसलमानों को इल्म नाफे हासिल करने पर बहुत जोर देते हैं, और उनके सामने इल्म हासिल करने के फज़ाइल बयान करते हैं और यह बताते हैं कि फरिश्ते अपने परों को तालिबाने उलूमे नुबूवत के लिए बिछा देते हैं, वह उस काम से खुश हैं जिस में वह मशगूल हैं, उन का यक़ीन है कि अस्ल कामयाबी इसी काम में है और इसमें कोई शक नहीं कि यह मुम्ताज़ तब्क़ा मुस्लिम मुआशरे को ऐसी खुसूसीयत से नवाज़ता है जिसकी बराबरी किसी चीज़ में नहीं, अल्लाह का इरशाद है।

अनुवाद– ''अल्लाह तआ़ला तुम में से ईमान वालों को और अहले इल्म को बुलन्द दरजात अता फरमाता है''।

(मुजादला:11)

यह अल्लाह का कानून है कि इस तब–कए–उलमा की सरगर्मियों को रोकने में उनकी कोशिशें कभी कामयाब नहीं होंगी, इनशाअल्लाह तआ़ला।

3. तीसरा तबका उन आम मुसलमानों का है जो मुस्लिम मुआशरे और इन्सानी मजमूए के माबैन जिन्दगी गुजारते हैं वह अक्सर हालात में इस्लाम की सुनी और देखी हुई मालूमात पर इक्तिफा करते हैं। मजीद इस्लाम और उस की तालीमात को जानने की बिल्कुल कोशिश नहीं करते उनमें एक तादाद ऐसे लोगों की भी होती है जो दीनी अहकाम की वाकफीयत में इजाफा की सच्ची तलब रखते हैं, लिहाजा वह उलमा का एहतराम करते हैं। और वक्तन फवक्तन उन की मज्लिसों में हाजिर होते हैं,

और दीनी तरबीयत की बुन्याद पर उनसे तअ़ल्लुक़ रखते हैं और वह कोशिश करते हैं कि जितना उन्होंने इल्म सीखा है, उसकी रोशनी में इस्लाम की नुमाइन्दगी करें, कभी कभी उन का दीनी अमल बाज़ जाहिरी शक्ल पर ही मुनहसिर होता है। उनके ज़ेहन व ख़याल में यह बात नहीं आती कि अल्लाह तआ़ला और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के उस पर क्या हुकूक़ आ़इद होते हैं, इसी तरह से बन्दे और मालिक के हूकूक़, और वह नफ़्ली काम और दीनी शआ़इर की ताज़ीम को कोई अहम्मीयत नहीं देते, बल्कि वह एक खास तर्ज़ की जिन्दगी पर इक्तिफ़ा करते हैं और उससे ऊपर किसी बात को नहीं समझते।

4. चौथा तबक़ा अनपढ़ों और उम्मी अफराद का है, जो ऐसे माहौल में जिन्दगी गुजारते हैं, जहां के लोग चन्द दीनी रुसूमात ही को दीन समझते हैं और अपनी दीनी व अख़्लाक़ी जिम्मेदारियों से बिल्कुल लाशऊर होते हैं उनकी सूरते हाल उन तबक़ात से मुख्तलिफ नहीं है जो तमाम इन्सानी सिफात से आजाद होते हैं, बिलाशुब्हा यह तबक़ा सिर्फ लफ़्ज़े इस्लाम के साथ जिन्दगी गुजारता है और वह ऐसे काम करता है जिन का इन्सानियत से जर्रा बराबर भी तअ़ल्लुक़ नहीं होता, इन्सानी कदरों का शऊर भी उनके अन्दर नहीं होता, और वह उन गुनाहों में मुलव्विस होते हैं, जो अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की नाराजगी का सबब बनते हैं।

बिला शुब्हा दीन से दूरी और शरीअ़ते इस्लामी से नावाकिफियत ही ऐसे अफराद को गैर शरई ज़िन्दगी गुजारने पर आमादा करती है, चुनांचे वह ऐसी जिन्दगी गुजारते हैं जो जानवरों से भी बदतर होती है। और अल्लाह के ग़ज़ब को भड़काती है, फिर कहरे इलाही का नुजूल होता है, कहने वाले ने सही कहा है ''गुनाह मुसीबतों का सबब बनते हैं''।

आज कल जो इन्सानी हवादिस व वाकिअ़ात, मुखतलिफ़ शक्लों में रुनुमा हो रहे हैं, उनके पीछे मअ़सियतों का असर नज़र आता है यह एक तैशुदा हक़ीकत है, जब भी इन्सान अपने अस्ल तरीके से हटा और उस ने मअ़सियत की तरफ रुख किया है और नफ़्स का मुतीअ़ व फरमांबरदार बना और अपनी बागडोर शयातीने इन्स व जिन्न के सुपुर्द कर दी है तो उसको फसाद व हलाकत और खूंरेज़ी और मासूम इन्सानों के क़त्ल व गारतगरी का सामना करना पड़ा है, आज हमारे सामने बरमा के उन रोहिंगियाई मुसलामानों की हुरमत की बड़ी सतह पर पामाली का मसअला है, जो इज्तिमाई नस्ल कुशी के शिकार हुए, हज़ारों रो हिंगियाई मुसलमान कत्ल किए गए और जलाए गए और अब हजारों जिलावतनी की जिन्दगी गुजार रहे हैं।

शेष पृष्ठ... 29 पर

बच्चों की तरबीयत के कुछ रहनुमा उसूल

—मौलाना जाफर मसऊद हसनी नदवी

अकसर वालिदैन को यह शिकायत रहती है कि उनकी औलाद उनका कहना नहीं मानती जिसकी वजह से वह नफ्सियाती उलझन का शिकार और ज़ेहनी कोफत में मुब्तला रहते हैं। हालांकि इस मसले का हल इतना मुश्किल नहीं जितना कि वह समझते हैं दर्ज ज़ेल मज़मून में कुछ इसी किस्म की मिसालें पेश की जा रही हैं जो औलाद के अन्दर इताअ़त व फरमां बरदारी का जज़्बा पैदा करने में मुफीद हो सकती हैं।

पहली मिसालः–

ख़लील दस साल का एक लड़का है, जो अपने दोस्त के घर जाने के लिए अपनी वालिदा से इजाज़त मांग रहा है, वालिदा से इजाज़त मिलने के बाद वह अपने दोस्त से मिलने उसके घर रवाना हो जाता है, लेकिन बजाए इसके कि वह पांच बजे लौटे जैसा कि उसने अपनी वालिदा से वादा किया था वह छः बजे लौटता है। अब उसकी वालिद को उसके साथ किस तरह पेश आना चाहिए? और उसकी ताखीर पर उसके साथ क्या सुलूक करना चाहिए? इसके दो तरीक़े हैंः–

1.) उसके आते ही अपनी ख़फगी का इज़हार करे वादा ख़िलाफी पर उसकी सरज़निश करे और यह कहे कि वादा खिलाफी तो तुम्हारी आदत है तुम ने कभी वक़्त की पाबन्दी नहीं की अब तुम लेट आ कर देखो।

2). ख़ामोशी इख़्तियार करे और उसको इस बात का एहसास भी न होने दे कि उसने कोई ग़लती की है, उसको मौक़ा दे कर वह लिबास वगैरह तब्दील कर ले, थका हुआ हो तो सुस्ता ले, भूका हो तो खाना खा ले कोई ज़रूरत हो तो उससे भी फारिग़ हो जाए, और सुकून व इतमीनान के साथ रात गुज़ारे, अगले दिन जब वह दोबारा अपने किसी दोस्त से मिलने के लिए वालिदा से इजाज़त तलब करे तो माँ यह कहते हुए उसको जाने से रोक दे कि चूंकि तुम वादा पूरा नहीं कर पाते हो, लिहाज़ा आज मैं तुम को जाने की इाजज़त नहीं दूंगी।

समझाने का यह संजीदा तरीक़ा पहले तरीक़े से कहीं बेहतर है, जिसमें ना चीख पुकार मचती है ना माँ की ज़ेहनी कोफत घटने के बजाए और बढ़ती है, ना लड़के के अन्दर महाज़ आराई और हटधर्मी की कैफियत पैदा होती है और माँ के इस तर्जे अमल में लड़के को एक माँ का नहीं अजनबी औरत का अक्स नज़र आता है, जिसकी वजह से वह अपनी माँ से दूर होता चला जाता है।

दूसरी मिसालः–

एक लड़का है, रशीद उसका नाम है, उम्र लगभग

10 साल है, एक बिल्ली उसे पसन्द है, जिसको वह पालना चाहता है, वालिदा को उसका बिल्ली पालना पसन्द नहीं, लेकिन वह यह भी नहीं चाहती कि एक दम से इंकार करे बच्चे की ख़्वाहिश का गला घोंट दे, चुनांचे संजीदगी के साथ वह इस मसले का हल तलाश करती है और उस नतीजे पर पहुंचती है कि बच्चे की यह ख़्वाहिश वक़्ती है जो चन्द ही दिनों में उसके दिल से निकल जाएगी और जल्द ही नौबत यहां तक आ जाएगी कि बच्चा बिल्ली की तरफ से लापरवाही बरतने लगेगा, और बिल आख़िर वह बिल्ली उसकी लापरवाही का शिकार हो जाएगी, और इस तरह बिल्ली से छुटकारा मिल जाएगा, चुनांचे माँ ने बच्चे की बात मान ली और उसके साथ साथ उसने एक शर्त यह भी लगा दी कि बिल्ली की देखभाल तनहा तुम्हारी ज़िम्मेदारी होगी, और मेरा उससे कोई तअ़ल्लुक़ नहीं होगा, अगर तुम बिल्ली की देखभाल में कोताही करोगे तो उसका नुक़सान भी तन्हा तुम को उठाना होगा, रशीद वालिदा की यह शर्त तस्लीम कर लेता है, शुरु में तो वह बिल्ली का बड़ा ख़्याल रखता है, और उसकी देखभाल में बड़ी सरगर्मी दिखाता है, लेकिन आहिस्ता आहिस्ता उसका तअ़ल्लुक़ बिल्ली से कम होने लगता है और बाज़ वक़्त तो वह बिल्ली को खाना और पानी देना तक भूल जाता है चुनांचे एक वक़्त वह आता है कि भूख और प्यास से वह बिल्ली जान दे देती है। माँ को जब बिल्ली की मौत का इल्म होता है तो फौरन आग बगूला नहीं होती और न ही रशीद की लापरवाही पर उसको मलामत करती है, और न ही उसको ज़ालिम और क़ातिल जैसे ख़िताब से नवाज़ती है, बल्कि निहायत सुकून व इत्मीनान के साथ उससे कहती है कि मेरे और तुम्हारे दरमियान जो मुआहिदा हुआ था कि तुम बिल्ली की देखभाल करोगे और उसको किसी भी तरह की तकलीफ न होने दोगे, इस मुआहदा को पूरा करने में तुम नाकाम रहे जिसकी वजह से एक बिल्ली की जान गयी, लिहाज़ा अब आइन्दा मैं तुमको बिल्ली वगैरह पालने की इजाज़त न दूंगी, इस तरह रशीद को अपनी गलती का एहसास होगा और लापरवाही पर निदामत व पशेमानी होगी और वह खुद ही किसी जानवर को पालने से तौबा कर लेगा। लेकिन अगर रशीद की वालिदा शुरु ही में सख्त रवय्या अपनाती और रशीद की ख़्वाहिश को शुरु ही में दबाने की कोशिश करती तो हो सकता था कि रशीद भड़क जाता और बगावत पर आमादा हो जाता, लड़ता झगड़ता और माँ के हुक्म के खिलाफ वर्ज़ी करते हुए ज़बरदस्ती अपनी ख़्वाहिश को पूरा करने की कोशिश करता और फिर यही उसकी आदत बन जाती, और अपनी हर ख़्वाहिश वह लड़ कर यूं ही पूरा करता, दूसरी तरफ

उसको यह भी एहसास होता कि वालिदा उसको चाहती नहीं हैं, और उसके हर काम में रुकावट बनती हैं, और यह बात उसके लिए जहां मुहलिक साबित होती वहीं माँ के लिए तकलीफ देह।

यहाँ पर एक बात और समझ लेना चाहिए कि माँ को अगर अपने बच्चे से कोई काम लेना हो तो उसको चाहिए कि उस काम की पूरी वज़ाहत करे, मुबहम अन्दाज़ इस्तिमाल न करे क्योंकि ऐसी सूरत में बच्चा काम को ठीक से समझ नहीं पाता वह नाक़िस काम अन्जाम देता है, और काम को सही तौर पर अन्जाम न देने की वजह से उसको डाँटा जाता है और कम अकली का तअ़ना दिया जाता है, जिसकी वजह से उसके दिमाग में दो बातें आती हैं, एक तो यह कि वह कम फहम है, चुनांचे वह एहसास कमतरी का शिकार हो जाता है, दूसरे यह कि काम करने और न करने दोनों में डाँट खाना पड़ती है, लिहाज़ा वह काम के नाम ही से भागने लगता है। मिसाल के तौर पर अगर माँ यह चाहती है कि युनूस का कमरा साफ रहे तो उसको यूनुस से यह नहीं कहना चाहिए कि अपना बेढंगापन दूर करे और कमरा को साफ सुथरा रखे बल्कि उसको चाहिए कि वह यूनुस के सामने सफाई सुथराई की पूरी वज़ाहत करे, मसलन यह कहे कि देखो, अपने कपड़े अलमारी में रखो, जूते पलंग के नीचे रखो, चादर मैली हो तो उसको तब्दील कर दो, मैले कपड़ों को इधर उधर मत डालो बल्कि कोठरी में रख दो इस तरह यूनुस के अन्दर सलीक़ा पैदा होगा और बेढंगे पन का मफहूम सही तौर पर समझ सकेगा।

इससे बेहतर एक तरीक़ा और भी है और यह वह तरीक़ा है जो ऐसे मौक़े पर की जाने वाली दसियों नसीहतों से बेहतर और कहीं ज़ियादा मुअस्सिर है, वह तरीका बच्चे के दिल में माँ बाप की महब्बत भी पैदा करता है, उनकी अज़मत भी बढ़ाता है, अपनी लापरवाही पर शर्मिन्दगी के एहसासात भी पैदा करता है और उसके दिमाग को इतना बेदार कर देता है कि मामूली सी बेतरतीबी भी वह महसूस कर लेता है और कोशिश करता है कि अपनी बेखयाली व लापरवाही का बोझ अपने माँ बाप पर न डाले।

इस्लाह का यह तरीक़ा क़ौली नहीं अमली है, यानी आप बजाए कहने और टोकने के वह काम अपने हाथ से करदें जो काम खुद लड़के को करना चाहिए था, मसलन जब वह सुब्ह उठता है तो तकिया बजाए सिरहाने के पायताने पड़ा होता है, बेड शीट आधी बेड पर आधी लटक रही होती है, कम्बल बेतरतीब बिस्तर पर पड़ा होता है, अब अगर आप उसकी यह बेतरतीबी दुरुस्त कर देते हैं बगैर उससे कुछ कहे हुए तो हो सकता है कि यह दो दिन उसको कोई ख्याल न आए लेकिन धीरे धीरे फिर उसको शर्मिन्दगी का एहसास होने लगेगा

और फिर यही शर्मिन्दगी आहिस्ता आहिस्ता उसको सलीक़ामन्द बनाने का काम करेगी और फिर एक वक़्त वह आता है जो लड़का उन बेतरतीब चीज़ों को यूंही बेतरतीब छोड़ दिया करता था वह दूसरों की बेतरतीब पड़ी हुई चीज़ों को भी तरतीब से रखने लगेगा और हर वक़्त उसको सामान का सही जगह पहुंचाने का ख्याल रहेगा इस अन्देशे से कि कहीं उसकी बेख्याली की वजह से यह काम उसके माँ–बाप को न करना पड़ जाये।

इसी तरह तरबीयत के सिलसिले में यह भी ज़रूरी है कि माँ सख़्ती और पुख्तगी के फर्क़ को समझे। पुख़्तगी यह है कि माँ जो फैसला करे उस पर रहे जो मुआ़मला तय करे उसको पूरा करे और अपने मौकिफ से ज़रा भी पीछे न हटे, दर्ज ज़ेल मिसाल से पुख़्तगी का मफ़हूम वाज़ेह हो जाता है।

बुशरा नौ साल की एक बच्ची है जो अपनी सहेली के घर एक पार्टी में मदऊ़ है, पार्टी से एक रोज़ क़ब्ल जब वह अपनी वालिदा से पार्टी में जाने के लिए इजाज़त चाहती है तो उसकी माँ उसको इस शर्त के साथ पार्टी में शिर्कत की इजाज़त देती है कि वह अपना होमवर्क पार्टी में जाने से पहले करले वरना उसको पार्टी में जाने की इजाज़त नहीं दी जाएगी, बुशरा इस शर्त को मंज़ूर कर लेती है, लेकिन वह थोड़ी ही देर में माँ से खेल कूद में लग जाती है, यहां तक कि जब पार्टी में जाने का वक़्त आता है तो वह दौड़ती हुई अपनी माँ के पास आती है और कहती है कि वह उसको उसकी सहेली के घर पहुंचा दे लेकिन उसकी माँ उसको सहेली के घर पहुंचाने से इंकार कर देती है, क्योंकि बुशरा ने वादा की पाबन्दी नहीं की थी और स्कूल का काम घर पर नहीं किया था, बुशरा यह देख कर इसरार करती है और रोने लगती है, और वादा करती है कि वह आइन्दा ऐसा नहीं करेगी बस इस मरतबा जाने की इजाज़त दे दी जाए? लेकिन उसकी माँ उसके रोने से मुतअस्सिर नहीं होती और अपने फैसले से पीछे नहीं हटती बल्कि वह बुशरा की सहेली के घर जाती है और उससे बुशरा के न आने पर मअ़ज़िरत कर लेती है, इस तरह बुशरा यह समझ लेती है कि रोने से काम नहीं चलता, और इसरार से माँ पर दबाव नहीं डाला जा सकता और बात न मानने का नुक़सान पहुंच कर रहता है।

चौथी मिसाल, मुहम्मद अहमद पाँच साल का एक बच्चा है, साथियों में उसकी शोहरत यह है कि वह बहुत लड़ाका है, ज़रा ज़रा सी बात पर हाथ उठा लेता है जिसकी वजह से उसकी मां को अक्सर शर्मिन्दगी का सामना करना पड़ता है, डाँट डपट और सज़ाओं के बाद भी मुहम्मद अहमद अपनी हरकत से बाज़ नहीं आता, ऐसी सूरत में उसकी मां को क्या करना चाहिए?

माँ को चाहिए कि वह बच्चे को कहीं ले जाने का प्रोग्राम बनाएं मसलन खाला के घर, और निकलने से पहले बच्चे से कह दें कि वह वहां जा कर कोई शरारत नहीं करेगा, अपने खालाज़ाद भाइयों में से न तो किसी को मारेगा, न तो किसी को छेड़ेगा और न किसी की कोई चीज़ छीनेगा, अगर उसने वहां जा कर ऐसी कोई हरकत की तो वह फौरन वापस उसको घर लौटा देगी।

मुहम्मद अहमद अपने खालाज़ाद भाईयों में से किसी को भी न मारने का वादा कर लेता है, लेकिन खाला के घर पहुंचने के पांच ही मिनट के बाद उसका हाथ अपने से छोटी एक खालाज़ाद बहन पर उठ जाता है, माँ को जब इसकी ह़रकत की इत्तिला होती है तो वह खामोशी के साथ उसका हाथ पकड़ती है और उसको लेकर घर वापस आ जाती है, ना तो वह उसके रोने की परवाह करती है और ना चीखने और चिल्लाने की।

इस वाक़िया के कुछ दिन के बाद वह फिर मुहम्मद अहमद को लेकर बाज़ार जाती है और जाने से पहले फिर वह मुहम्मद अहमद से किसी को न मारने का वादा ले लेती है लेकिन मुहम्मद अहमद बाज़ार पहुंचते ही उस वादे को भूल जाता है और एक छोटे से लड़के को मार बैठता है, माँ फौरन उसको ले कर घर रवाना हो जाती है, वह रोता है और आइन्दा न मारने का यक़ीन दिलाता है, लेकिन माँ के इरादे की पुख़्तगी में उसका रोना असर अन्दाज़ नहीं होता, दो चार वाक़ियात इस तरह पेश आ जाने के बाद अहमद को यक़ीन हो जाता है कि उसकी वालिदा जो कहती हैं वह कर गुज़रती हैं, चुनांचे वह अपनी इस मज़मूम हरकत से बाज़ आ जाता है, क्योंकि उस को सज़ा का यक़ीन हो जाता है। यह तरी–क़ए–इलाज अगरचे माँ के लिए मुश्किल है लेकिन उसके जो नताइज सामने आते हैं उनको देखते हुए यह मुश्किल भी आसान है।

अक्सर माँओं को यह शिकायत रहती है कि उन के बच्चे सुब्ह वक्त पर बेदार नहीं होते, स्कूल जाने का वक्त हो जाता है, और वह आँखे मलते रहते हैं, ऐसी सूरत में माँ को चाहिए कि रात को जल्द सोने और सुब्ह सवेरे उठने के लिए एक वक़्त मुकर्रर कर दे, और लड़के के ज़ेहन में यह बात बिठाने की कोशिश करे कि अब वह बच्चा नहीं है कि उसको अपने हर काम में माँ की ज़रूरत पड़े, उसको चाहिए कि अपने काम खुद अन्जाम दे, खुद से उठे, स्कूल जाने की तैयारी करे, और वक़्त पर स्कूल जाए, और अगर वह ऐसा नहीं करता तो उसके नताइज का खुद जिम्मेदार होगा।

यह एक तबई बात है कि बच्चे पर इन बातों का कोई असर नहीं पड़ता और वह आ़दत के मुताबिक़ सुब्ह के वक़्त हर मुआ़मले में माँ का मुन्तज़िर रहता है और माँ

शेष पृष्ठ....29 पर

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः जब इन्सान मौत के करीब हो तो उसे किस तरह लिटाया जाए? इस बारे में रहनुमाई फरमाएं इसलिए कि अक्सर देखा जाता है कि लोग मय्यित को इस तरह लिटाते हैं कि पांव किबले की तरफ होते हैं जो अदब के खिलाफ मालूम होता है?

उत्तरः जब इन्सान के इन्तिक़ाल का वक्त करीब हो जाए तो हो सके तो उसको किबला रुख कर दें किबला रुख करने की दो सूरतें हैं, एक यह है कि जैसे सोते वक़्त दाहिनी करवट सोना मस्नून है, उसी तरह किबला रुख कर के दाहिनी करवट लिटा दिया जाए, दूसरा तरीक़ा यह है कि उसको चित लिटा दिया जाए और पांव किबले की तरफ हों और सर को कुछ ऊँचा कर दें चेहरा किबला रुख हो जाए इस सूरत में पांव किबले की तरफ होते हैं मगर मकसद पांवों को किबले की तरफ करना नहीं होता है बल्कि चेहरे को किबला रुख करना मक्सूद होता है, इसलिए इस सूरत में किबले की बे अदबी नहीं होती इसलिए कि इस सूरत में चेहरे को किबला रुख करना मक़्सूद होता है।

(रद्दुल मुहतारः 3/78)

प्रश्नः क्या मय्यित के क़रीब कुर्आन मजीद पढ़ सकते हैं?

उत्तरः मय्यित को जब तक गुस्ल न दिया जाए उस वक्त तक वह नापाक है इसलिए गुस्ल से पहले मय्यित के करीब कुर्आन मजीद पढ़ना मकरूह है, अल्बत्ता गुस्ल देने के बाद पढ़ सकते हैं।

(कबीरीः 533)

प्रश्नः मय्यित को रिश्तेदारों के इन्तिज़ार में देर तक रखते हैं, कभी कभी एक दिन और एक रात का वक़्फा हो जाता है, ऐसा करना शरअ़न कैसा है?

उत्तरः किसी के इन्तिक़ाल के बाद तदफीन में जल्दी करना चाहिए, रिश्तेदारों के इन्तिजार में ज़ियादा देर तक मय्यित को रोके रखना पसन्दीदा नहीं है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व आलिहि व सल्लम ने मय्यित की तदफीन में ताखीर करने को नापसन्द फरमाया है, हज़रत अली रज़ि0 की रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अली! तीन चीज़ों में ताख़ीर मत करना! नमाज़ जब उस का वक्त हो जाए, जनाज़ा जब आ जाए और निकाह जब लड़की के लिए मुनासिब रिश्ता आ जाए।

(तिर्मिजी हदीसः 1075)

प्रश्नः शौहर के इन्तिक़ाल के बाद, बीवी का उसके चेहरे को देखना या जिस्म को हाथ लगाना, इसी तरह बीवी के इन्तिकाल के बाद शौहर को उसके चेहरे को देखना या जिस्म को हाथ लगाना दुरुस्त है या नहीं?

उत्तरः शौहर के इन्तिकाल के बाद बीवी के लिए उसको देखना और हाथ लगाना जाइज है, और अगर जरूरत हो तो उसको गुस्ल देने की भी इजाज़त है, इसलिए कि शौहर के इन्तिक़ाल के बाद

जब तक वफात की इद्दत गुज़र न जाए, एक हद तक वह अपने शौहर के निकाह में रहती है इसलिए उसके लिए देखने छूने और जरूरत पर गुस्ल देने की इजाज़त है, लेकिन बीवी के इन्तिक़ाल के बाद शौहर के लिए उसको छूना या गुस्ल देना जाइज नहीं है अलबत्ता देख सकता है इसलिए कि बीवी मरने के बाद एक अजनबी औरत के हुक्म में हो जाती है। अलबत्ता हसकफी ने सराहत की है कि शौहर को वफ़ात पाई हुई बीवी को गुस्ल देने और देखने से रोक दिया जाए लेकिन सही कौल के मुताबिक देखने से मना नहीं किया जाएगा।

(दुर्रुल मुहतारः 668)

प्रश्नः क्या मुर्दे को सफेद के अलावा रंगीन कपड़े का कफ़न दिया जा सकता है?

उत्तरः मुर्दों को सफ़ेद कपड़े का कफन देना अफजल है, एक हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अल्लाह तआला के नज़दीक सब से पसन्दीदा कपड़ा सफेद कपड़ा है जो लोग जिन्दा हैं वह सफेद कपड़ों से अपने लिबास बनाएं और मुर्दों को ऐसे ही कपड़ों में कफ़न दिया जाए।

(मुसतदरक हाकिम हदीस 1304)

इस हदीस से मालूम हुआ कि रंगीन कपड़े के बजाए सफ़ेद कपड़ों में कफ़न दिया जाए।

प्रश्नः अगर कोई शख्स अपनी औलादों में से किसी एक को अपना पूरा मकान अपनी ज़िन्दगी में दे दे और दूसरी औलादों को न दे तो शरअ़ में इसकी गुंजाइश है? जिस लड़के को दे रहे हैं वालिदैन उनसे खुश हैं और जिनको नहीं दे रहे हैं उनसे वालिदैन नाखुश हैं क्या वालिदैन के लिए ऐसा करना दुरुस्त है?

उत्तरः औलाद के दरमियान अदल व मसावात ज़रूरी है किसी को देना और किसी को न देना जुल्म है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने औलाद के दरमियान माल की तकसीम में तफरीक से मना फरमाया है और बराबरी का मुआमला करने का हुक्म दिया है। फरमाया "अल्लाह से डरो और अपनी औलाद में इंसाफ करो"।

(मुस्लिम शरीफः 4181)

प्रश्नः वरसा के दरमियान मीरास की तकसीम हो और कोई चीज ऐसी बच रही हो जैसे गाड़ी उसे हर एक लेना चाहता हो तो उसकी तकसीम की क्या सूरत होगी?

उत्तरः माले मतरूका में कोई चीज तकसीम के लाइक न हो तो वरसा के दरमियान उसकी तकसीम की सूरत यह है कि उसकी कीमत लगा दी जाए और पर्ची डाल कर जिसका नाम निकले उसको वो चीज दे दी जाए और कीमत हर एक में उनके हिस्से के बराबर तकसीम कर दीजाए। हदीस शरीफ में पर्ची डाल कर नाम निकालने की इजाज़त मिलती है।

(मुस्लिम शरीफः 6298)

प्रश्नः आज कल हमारे हिन्दोस्तान में लड़कियों की शादी में भारी जहेज़ देना पड़ता है क्या उस जहेज़ की कीमत को मीरास की तकसीम के वक्त लड़की के हिस्से से कम कर सकते हैं?

उत्तरः वरासत का तअ़ल्लुक उन मालों से है जो मोरिस की मौत के बाद बच रहे हों जिन्दगी में लड़कों या लड़कियों को जो कुछ दिया जाता है वो हिबा के हुक्म में

है, हिबा की वजह से वरासत में कोई असर नहीं पड़ेगा और जहेज़ या तिलक की रकम वारिस के हिस्से से कम न की जाएगी और लड़कियों को वरासत में पूरा पूरा हक मिलेगा।

(बदाये सनायेः 5/9)

प्रश्नः एक शख्स का इन्तिक़ाल हुआ, जिस की कोई औलाद नहीं है, वारिसीन में बीवी और भाई वगैरा हैं, मोरिस के पास एक जाती मकान है, इस मकान में बीवी का कितना हिस्सा होगा? शौहर ने महर अदा नहीं किया था तो क्या महर के बकद्र उस मकान में हिस्सा मिलेगा?

उत्तरः मोरिस लावलद है और वरसा में बीवी और भाई हैं तो बीवी का हिस्सा एक चौथाई होगा बक़ीया माल भाईयों को मिलेगा, लेकिन वरासत की तक्सीम से कब्ल महर अदा करना वाजिब है, मकान की कीमत लगाई जाएगी महर के बकद्र कीमत अलग करने के बाद बकीया रकम चार हिस्सों में तक्सीम होगी एक हिस्सा बीवी को मिलेगा और बक़ीया तीन हिस्से भाईयों को मिलेंगे गोया बीवी को महर की रक़म मिलेगी और बाकी रही रकम में से एक चौथाई रकम मिलेगी बाकी तीन चौथाई भाईयों को मिलेगी, कुर्आन मजीद में आया है अनुवाद ''अगर औलाद न हो तो तुम ने जो कुछ छोड़ा है उस में बीवियों को एक चौथाई हिस्सा मिलेगा''।

(अन–निसाः 12)

प्रश्नः एक पागल शख्स (जिस की कई औलाद हैं) के वालिद का इन्तिक़ाल हो गया है, उन्होंने जाइदाद मन्कूला व गैर मन्कूला सब छोड़ी है, वरसा आपस में तक्सीम कर रहे हैं लेकिन पागल की औलादों को हिस्सा नहीं दे रहे हैं और यह कह रहे हैं कि पागल को वरासत में हिस्सा नहीं मिलता है? इस बारे में इस्लामी शरीअ़त में क्या हुक्म है?

उत्तरः पागल भी वारिस होता है और मोरिस के माले मतरूका में उस को भी हिस्सा मिलेगा, इसलिए पागल की औलाद मजकूरा सूरत में अपने वालिद का हिस्सा लेने के हक़दार हैं।

(दुर्रे मुख्तारः 10/503)

प्रश्नः एक शख्स इन्तिकाल कर गया है उनके वारिसीन मौजूद हैं क्या कोई वारिस दीगर वरसा की इजाज़त के बगैर मरहूम के माले मतरूका में से बराए इसाले सवाब फुक्रा पर खर्च कर सकता है?

उत्तरः अगर माल मुशतरक हो तक्सीम शुदा न हो तो तमाम वरसा की इजाज़त के बगैर तन्हा कोई वारिस तसर्रुफ नहीं कर सकता चाहे कारे खैर ही क्यों न हो। (दुर्रे मुख्तारः 10/503)

प्रश्नः हज़रत अब्दुल कादिर जीलानी रह0 के फातिहे का क्या तरीक़ा है? क्या उनके फातिहे की मिठाई खुद खाई जा सकती है?

उत्तरः फातिहा आम ज़बान में ईसाले सवाब को कहते हैं, ईसाले सवाब का तरीक़ा यह है कि कोई भी नेक काम करें जैसे कुर्आने मजीद से सूरतुल फातिहा पढ़ें या और सूरतें पढ़ें या कच्चा या पक्का खाना किसी गरीब को दें या किसी ज़रूरत मंद को कपड़ा वगैरा मुहैया करें फिर अल्लाह तआ़ला से दुरूद शरीफ पढ़ कर दुआ करें कि ऐ अल्लाह इस का सवाब फुलां की रूह को बख्श

दीजिए। जिस को सवाब बख्शें उस का मुसलमान होना जरूरी है गैर मुस्लिम को सवाब नहीं पहुंचता, हज़रत अब्दुल कादिर जीलानी रह0 के फातिहा का भी यही तरीक़ा है, जो खाना या मिठाई फातिहे के लिए खास करें उसमें से खुद कुछ भी न खाएं वह गरीबों का हक है उसमें से जो खुद खा लेंगे उसका सवाब हज़रत जीलानी रह0 को न पहुंचेगा।

❖❖❖

चार तबक़ात और.....

आज हमारे सामने एक सुवाल है जो जवाब का मुताकाजी है कि आखिर कयों मुसलमान ही हर मुल्क में और हर जगह इन वहशियाना और मज़लूमाना कारवाइयों का निशाना बन रहे हैं आखिर इस की अस्ल वजह क्या है? मैं उम्मीद करता हूं कि यह हकीर सुवाल उलमाए उम्मत, कौमी लीडरों के कानों से ज़रूर टकराएगा और उसका जवाब कुर्आन व सुन्नत की रोशनी में देंगे और अल्लाह नेकूकारों के अज्र को जाए नहीं करता।

❖❖❖

बच्चों की तरबीयत.....

चुंकि उससे कह चुकी है कि अब वह उसके किसी काम में दखल नहीं देगी, और उसको अपने काम खुद करने होंगे, लिहाज़ा वह उसकी तरफ से बेफिक्र हो जाती है, नतीजा यह निकलता है कि लड़के की बस छूट जाती है और वह स्कूल जाने से रह जाता है अब माँ का काम यह है कि वह स्कूल ना जाने पर उसकी सरज़निश करे और जब तक स्कूल का वक़्त रहे उस वक़्त तक घर से निकलने न दे और घर में भी उसके साथ इस तरह पेश आए कि बच्चा अपने को या तो मरीज़ समझे या क़ैदी, अगर माँ ने ऐसा कर लिया तो दो चार मरतबा की इस सज़ा के बाद वह बच्चा खुद वक़्त पर उठने लगेगा, और माँ के उठाने का इंतिज़ार नहीं करेगा, इस लिए कि पूरे दिन घर में क़ैदी बन कर रहना उसके लिए सख़्त तक्लीफ दह साबित होगा।

(तामीरे हयात 15 अक्तूबर 2017 से ग्रहीत)

❖❖❖

दिन है संविधान का

दिन है संविधान का
प्यारे हिन्दोस्तान का
राष्ट्र ध्वज फहरायेंगे
गीत खुशी के गायेंगे
राष्ट्रगान हम गायेंगे
लड्डू पेड़े खायेंगे
भारत प्यारा जिन्दाबाद
हिन्द हमारा जिन्दाबाद
लोकतंत्र का दिवस है यह
संविधान का दिवस है यह
दिन है भारत वालों का
गंगा यमुना वालों का
भारत प्यारा जिन्दाबाद
हिन्द हमारा जिन्दाबाद
संविधान है बड़ा महान
इसमें है सबका सम्मान
हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई
हक़ है सबका एक समान
भारत प्यारा जिन्दाबाद
हिन्द हमारा जिन्दाबाद

❖❖❖

नया साल या रब मुबारक हो सबको

—इदारा

नया साल या रब मुबारक हो सब को
नया साल लाये दिलों का क़रार

हो रहमत की बारिश हर इक रोज इसमें
मिलें नेअ़मतें भी हज़ारों हज़ार

सेहत से रहे या ख़ुदा हर कोई यां
न बीमार हो कोई बूढ़ा जवान

न स्वाइन फ्लू हो न डेंगू किसी को
न आये किसी को दिमागी बुख़ार

न बारिश हो तूफान वाली यहां
न सूखे का मौसम हो या रब यहां

हो खेती में ग़ल्ला ज़रूरत से ज़ाइद
हों बाग़ों में फल बे अदद बे शुमार

न झगड़ा लड़ाई हो आपस में यां
न फितना हो यां पर न कोई फसाद

हो अम्नो सुकूं हर तरफ यां पे या रब
रहे यां पे अम्नो अमां की बहार

हर इक सर में हो बस तरक़्क़ी का सौदा
हर इक को लगी धुन तरक्क़ी की हो

गरीबी का नामो निशां न रहे यां
रहे हर कोई साहिबे रोज़गार

मगर जो तरक़्क़ी खुदा को भुला दे
तरक़्क़ी नही वह है घाटे का माल

खुदा को भुला कर तरक़्क़ी करे जो
हुआ तीरे शैतां का वह है शिकार

ख़ुदा की मदद बिन तरक़्क़ी कहां
तू धोखा ना खा प्यारे धोखा न खा

थी क़ारून के पास दौलत बहुत
धंसा दी गई वह तो अंजाम कार

जो दौलत दिखाये जहन्नम की राह
ऐसी दौलत से बेहतर ग़रीबी ही है

हर इक की समझ से यह बाहर है बात
मगर इस को समझेगा ईमान दार

है खुदा की ये सुन्नत सुनो दोस्तो
खूब मेहनत करो और दुआएं करो

खेत बोए बिना ग़ल्ला चाहेगा जो
होगा ऐसों का तो अहमकों में शुमार

बातें सारी यह हैं जांची परखी हुई
गर यक़ीं तुम को न हो तो खुद जांच लो

जांच लो जांच लो हर तरह जांच लो
जांचने में तो हरगिज़ न रखो उधार

राष्ट्रीय गीत

—अब्दुल रशीद सिद्दीक़ी नसीराबादी

वतन से है महब्बत जिसको, हर इनसान बोलेगा।

अगर मैं चीर दूं सीना, तो हिन्दुस्तान निकलेगा।।

मैं भारत का सिपाही हूं, पिया गंगा का है पानी।

मेरे दादा का भारत में तो, कब्रिस्तान निकलेगा।।

मैं हिन्दी हूं, ज़बां उर्दू, ये उर्दू भी ज़बां हिन्दी।

मेरे तो खून के कतरे में, हिन्दुस्तान निकलेगा।।

बहुत सी क़ौम मिलकर हैं कहां, तुम यह तो बतलाओ।

जहां में ढूंढ़ कर देखो तो, हिन्दुस्तान निकलेगा।।

कोई हिन्दू, कोई मुस्लिम, कोई है सिख, ईसाई।

है इनका कौन पालनहार, तो रहमान निकलेगा।।

जहां में है अगर बाकी, ये आपस की सिला रहमी।

तो हिन्दुस्तान, हिन्दुस्तान हिन्दुस्तान निकलेगा।।

वतन तेरा कहां सिद्दीक़ी, कोई हम से पूछेगा।

तो हिन्दुस्तान, हिन्दुस्तान हिन्दुस्तान निकलेगा।।

औरंगजेब की चवन्नी का कमाल

—जमाल अहमद नदवी

मुल्ला अहमद जीवन रह0 हिन्दुस्तान के मुगल बादशाह औरंगज़ेब आलमगीर रह0 के उस्ताद थे।

औरंगजेब अपने उस्ताद का बड़ा आदर एवं सम्मान करते थे, और उस्ताद भी अपने शागिर्द पर फख्र करते थे।

जब औरंगजेब रह0 हिन्दुस्तान के बादशाह बने तो उन्होंने अपने गुलाम के जरिये अपने उस्ताद को पैगाम भेजा कि वह किसी दिन देहली तशरीफ लायें और खिदमत का मौका दें।

संयोग से वह रमजानुल मुबारक का महीना था और मदरसे के विद्यार्थियों की भी छुट्टियां थीं, चुनांचि उन्होंने देहली का रुख किया।

शिक्षक और शिष्य की मुलाकात अस्र की नमाज़ के बाद देहली की जामा मस्जिद में हुई। उस्ताद को अपने साथ ले कर औरंगजेब रह0 शाही किले की ओर चल पड़े रमजान का पूरा महीना औरंगजेब और उस्ताद ने इकट्ठे गुज़ारा ईद की नमाज़ एक साथ अदा करने के बाद मुल्ला जीवन ने वापसी की इच्छा जाहिर की।

बादशाह ने जेब से एक चवन्नी निकाल कर अपने उस्ताद को पेश की, उस्ताद ने बड़ी खुशी से नजराना कबूल किया और घर की ओर चल पड़े।

उसके बाद औरंगजेब रह0 दकन की लड़ाईयों में इतने व्यस्त हुए कि चौदा साल तक देहली आना नसीब न हुआ।

जब वह वापस आये तो वजीरे आजम ने बताया मुल्ला अहमद जीवन एक बहुत बड़े जमींदार बन चुके हैं अगर इजाज़त हो तो उनसे लगान उसूल किया जाये। यह सुन कर औरंगजेब रह0 हैरान रह गये कि एक गरीब उस्ताद किस प्रकार जमींदार बन सकता है, उन्होंने उस्ताद को एक पत्र लिखा और मिलने की ख्वाहिश जाहिर की। मुल्ला अहमद जीवन पहले की भांति रमजान के महीने में तशरीफ लाये, औरंगजेब ने बड़े सम्मान के साथ उन्हें अपने पास ठहराया।

मुल्ला अहमद का पहनावा बातचीत और रहन सहन का ढंग पहले की भांति सादा था इसलिए बादशाह उनसे बड़ा जमींदार बनने के बारे में पूछने का हौसला जुटा न सका।

एक दिन मुल्ला साहब स्वयं कहने लगे ''आपने जो चवन्नी दी थी वह बड़ी बा बरकत थी, मैंने उससे बिनौला (कपास का बीज) खरीद कर कपास (रूई) की खेती की खुदा ने उसमें इतनी बरकत दी कि चन्द सालों में सैकड़ों से लाखों हो गये, औरंगजेब यह सुन कर खुश हुए और मुस्कुराने लगे और फरमायाः—

अगर इजाजत हो तो चवन्नी की कहानी सुनाऊँ, मुल्ला साहब ने कहा जरूर सुनायें। औरंगजेब ने अपने नौकर को आदेश दिया कि चांदनी चौक के सेठ ''उत्तम चंद'' को फुलां तारीख के खाते के साथ पेश करो, सेठ उत्तम चंद एक मामूली बनिया था, उसे औरंगजेब के सामने पेश किया गया तो वह डर के मारे कांप रहा था,

औरंगजेब ने नर्मी से कहा आगे आ जाओ और बगैर किसी घबराहट के खाता खोल कर खर्च की तफ्सील बयान करो, सेठ उत्तम चंद ने अपना खाता खोला और तारीख और खर्च की तफ्सील सुनाने लगा, मुल्ला अहमद जीवन और बादशाह चुप चाप सुनते रहे एक जगह आ के सेठ रुक गया। यहां खर्च के तौर पर एक चवन्नी नोट थी, लेकिन उसके सामने लेने वाले का नाम नहीं था, औरंगजेब ने नर्मी से पूछा, हाँ बताओ यह चवन्नी कहां गयी?

उत्तमचंद ने खाता बंद किया और कहने लगा अगर इजाजत हो तो दर्दभरी दास्तान अर्ज करूं? बादशाह ने कहा इजाजत है उसने कहा ऐ बादशाहे वक्त! एक रात बड़ी तेज बारिश हुई मेरा घर टपकने लगा, घर नया बना था और खातों का विवरण भी उसी घर में था मैंने बड़ी कोशिश की, लेकिन छत टपकती रही, मैंने बाहर झांका तो एक आदमी लालटेन के नीचे खड़ा नजर आया, मैंने मजदूर समझ कर पूछा, ऐ भाई मजदूरी करोगे? वह बोला क्यों नहीं,

वह आदमी काम पर लग गया, उसने तीन चार घंटे के करीब काम किया, जब घर टपकना बंद हो गया तो उसने अंदर आकर तमाम सामान ठीक किया, इतने में सुब्ह की अज़ान शुरु हो गयी, वह कहने लगा, सेठ साहब! आप का काम पूरा हो गया, मुझे आज्ञा दीजिए, मैंने उसे मजदूरी देने के उद्देश्य से जेब में हाथ डाला तो एक चवन्नी निकली, मैंने उस से कहा ऐ भाई! अभी मेरे पास यही चवन्नी है ये ले लो, और सुब्ह दुकान पर आना तुम्हें मजदूरी मिल जायेगी, वह कहने लगा यही चवन्नी काफी है मैं फिर हाजिर हनीं हो सकता, मैंने और मेरी बीवी ने उसकी इसके लिए बड़ी खुशामद की, लेकिन वह न माना और कहने लगा देते हो तो यह चवन्नी दे दो वरना रहने दो। मैंने मजबूर हो कर चवन्नी दे दी और वह लेकर चला गया, और उसके बाद से आज तक वह न मिल सका, आज इस बात को पंद्रह वर्ष बीत गये। मेरे दिल ने मुझे बड़ी मलामत की कि रूपया न सही अठन्नी दे देता, उसके बाद उत्तम चंन ने बादशाह से आज्ञा चाही और चला गया, बादशाह ने अपने गुरू मुल्ला अहमद जीवन रह0 से कहा यह वही चवन्नी है। क्योंकि मैं उस रात भेस बदल कर गया था ताकि जनता का हाल मालूम कर सकूं, इसलिए वहां मैंने मजदूर बन कर काम किया, उस्तादे मोहतरम खुश हो कर कहने लगे, मुझे पहले ही से आभास था कि यह चवन्नी मेरे होनहार शागिर्द ने अपनी मेहनत से कमाई होगी। औरंगजेब ने कहा हाँ वास्तव में, सही बात यह है कि मैं ने शाही खज़ाने से अपने लिए कभी ''एक पाई'' भी नहीं ली। हफ्ते में दो दिन टोपियां बनाता हूं, दो दिन मजदूरी करता हूं, मैं खुश हूं कि मेरी वजेह से किसी जरूरतमंद की जरूरत पूरी हुई यह सब आप की दुआओं का नतीजा है।

(तारीखे इस्लाम के दिलचस्प वाकियात से ग्रहीत)

❖❖❖

ख़बर की तहक़ीक़ का फ़ाइदा

—हज़रत मौलाना सय्यिद मुहम्मद राबे हसनी नदवी —हिन्दी लिपिः हुसैन अहमद

कुर्आन मजीद में आया है, अनुवादः ''ऐ वह लोगो जो ईमान लाए! अगर कोई गुनहगार आदमी तुम को ख़बर दे तो तुम उस ख़बर की तहक़ीक़ कर लिया करो, हो सकता है कि तुम अपनी नावाकिफीयत की वजह से कुछ लोगों को नुक्सान पहुंचा दो और फिर बाद में तुम को नादिम होना पड़े''।

(अलहुजरातः 6)

आदाबे मुआशरत की तालीम देते हुए इन्सानी मुआशरा से वाबस्ता एक अहम बात की तरफ इशारा करते हुए फरमाया गया कि तुम लोग जो आपस में बातें करते हो, उसमें एहतियात बरता करो, माकूल व मुतावाजे इन्सान की तरह रहो, किसी भी मुआमला में जल्द बाज़ी मत करो, अगर तुम्हें कोई ऐसी बात मालूम हो जो क़ाबिले तन्क़ीद है तो फौरन उस बात को आम न करो, ऐसा न हो कि उन बातों से कोई ऐसी ग़लत फहमी पैदा हो जाए जिससे नुक्सान हो, कोई शख्स तुम्हारे पास आ कर किसी के मुतअल्लिक कोई ख़बर दे, या कोई वाकिआ सुनाए या बताए कि फुलां शख्स आप के बारे में इस तरह कह रहा था, जब कि बात बिल्कुल खिलाफे वाकिआ हो, तो बगैर तहक़ीक के यह हो सकता है कि इन्सान उस की बात से मुतअस्सिर हो कर कोई ऐसी हरकत कर बैठे जिस से नुक्सान पहुंच जाए, और फिर बाद में अपनी गलती पर अफसोस हो, इसी लिए वजाहत के साथ फरमा दिया गया कि अगर कोई गुनहगार आदमी जो नेक इन्सान नहीं है, खुले तौर पर गुनाह करता है, झूट बोलता है, हर मौके पर ग़लत बात कहता है, जरा भी एहतियात नहीं बरतता, ऐसा आदमी जब तुम को कोई ख़बर दे तो तुम उस ख़बर को न मानो, जब तक उस की तहक़ीक़ न कर लो, तब तक उस की किसी बात पर कोई इक्दामी अमल न करो, ताकि तहक़ीक़ के बाद तुम्हें किसी तरह की शर्मिन्दगी महसूस न हो।

हमारे मुआशरा में इस तरह के बेशुमार वाकिआ़त होते रहते हैं, बेएहतियाती के साथ सुनाई गई खबर पर अमल कर लिया जाता है और बाद में मालूम होता है कि वह ख़बर ग़लत थी, जब कि बाद में उस पर की गई कार्यवाही को वापस नहीं लिया जा सकता है। जो नावाकफीयत की बुन्याद पर एक बेगुनाह इन्सान के साथ अमल में आई, आज कल लोगों का ऐसा मिज़ाज बन गया है कि वह महज तफरीह के लिए अपनी मज्लिसों में दूसरों का तज़किरा करते हैं, और बेख्याली में अपने तमाम अच्छे आमाल दूसरे शख्स को दे देते हैं, दीने इस्लाम में इसी को ''गीबत''

(परोक्षनिन्दा) कहा गया है। गीबत का मतलब ही यह होता है कि दूसरे के ऐब को जिक्र किया जाए, गीबत का मतलब यह नहीं कि किसी दूसरे पर इलजाम लगाया जाए, दूसरे पर इलज़ाम लगाने को ''इत्तिहाम'' यानी तोहमत लगाना कहते हैं, शरीअ़त में उन दोनों चीज़ों की सख़्त मुमानिअत है, आज हमारी सोसाइटी में गीबत का मरज बिल्कुल आम हो गया है, सिर्फ तफरीह की खातिर अक्सर लोग अपनी नेकियां दूसरों को दे देते हैं यह एक खुदाई निज़ाम है कि जिस ने गीबत की उसकी नेकियां लेकर उसको दे दी जाएंगी जिस की गीबत की गई, अगर उस शख्स की नेकियां थोड़ी होंगी तो जिस शख्स की गीबत की गई है उसके गुनाहों को उस पर लाद दिया जाएगा, गोया हमने जो काम तफरीह के लिए किया था उस की संगीनी यह साबित हुई कि हमारी आखिरत बरबाद हो गई, हम ने जो कुछ नेकियां की थीं वह भी खत्म हो गईं, अगर गौर किया जाए तो आज हम सब अपनी नेकियों को इस तरह खुद अपने आप बहा रहे हैं, जिस का नतीजा यह होगा कि हम आखिरत में चन्द आमाल करने के बावजूद भी बिल्कुल खाली हाथ होंगे, हमारी तमाम नेकियां दूसरे को दी जा चुकी होंगी।

कुर्आन में इसी किस्म के गैर मुहतात लोगों की खबर पर यक़ीन करने से मुसलमानों को मुतनब्बह किया गया, तहक़ीक़ का हुक्म दिया गया, इसलिए कि ऐसे लोग बसा अवक़ात किसी भी बात में मज़ीद नमक मिर्च लगा कर, बात को बढ़ावा दे कर पेश करते हैं, बे ऐब बात को ऐब दार बनाने की कोशिश करते हैं, जिससे इन्सान जज़बात में आ जाता है और नावाकिफीयत की बुन्याद पर गलत इक्दाम कर बैठता है जिसका नतीजा अच्छा नहीं होता और इन्सान को बाद में अफसोस होता है।

अरबी ज़बान की मशहूर किताब ''कलीला व दिम्ना'' में एक वाकिआ़ लिखा है जिससे मालूम होता है कि इन्सान को बगैर तहक़ीक़ के किसी बात पर फौरन इक्दाम नहीं करना चाहिए, वरना बसा अवक़ात इन्सान को ऐसी नदामत होती है जिसका कोई हल नहीं होता, किस्सा यूं है:—

एक शख्स ने अपने घर में न्योला पाला, जो सांपों को मार डालता था, उसकी वजह से उस के घर में सांप नहीं आते थे, और उसका एक छोटा बच्चा सांपों के न आने की वजह से घर में महफूज तरीक़े पर खेलता था, एक दिन की बात है कि वह शख्स बाहर किसी काम से अपने बच्चे को तन्हा सोता छोड़ कर गया, जब वापस आया तो उसने देखा कि न्योले के मुंह में खून लगा हुआ है, जिससे उस शख्स को यह शुब्हा हुआ कि उसने बच्चे को नोचा काटा है, इसी ख्याल से उस ने न्योले को मार डाला, उस के बाद जब अन्दर घर में जा कर देखा तो बच्चा महफूज सो रहा था

और वहां एक सांप मरा पड़ा था, जिस को उसी न्योले ने मारा था, और उसका मुंह उसी के खून से खून आलूद था, चुनांचे उस शख्स को अपने उस अमल पर बहुत अफसोस हुआ, लेकिन ऐसे अफसोस का क्या फाइदा जब कि बगैर तहक़ीक़ के इक्दामी कार्यवाही हो चुकी थी।

इस तरह के वाकिआ़त इन्सानी समाज में होते रहते हैं, इसलिए इस से सबक़ लेने की जरूरत है कि हम किसी भी गलत या मुबहम खबर पर हरगिज़ कोई कार्यवाही न करें, बल्कि खबर की तहक़ीक़ के बाद ही कोई कदम उठायें।

कठिन शब्दों के अर्थः–

आदाबे मुआशरत= जीवन बिताने के भले नियम, इन्सानी मुआशरा= मानवीय समाज, एहतियात= सावधानी, माकूल (मअ़कूल)= उचित, मुतवाजे (मुतवाजेअ़)=विनम्र, तफरीह= दिल खुश करना– मनोरंजन, मुमानअत= मनाही रोक, मुतनब्बह= सावधान, बसा अवक़ात= प्रायः, मुबहम= अस्पष्ट। ◆◇◆

ज़िन्दा रहना है तो मीरे कारवां बन कर रहो

–हज़रत मौ0 सय्यिद अबिल हसन अली नदवी रह0

हम एक एलान करते हैं और हम चाहते हैं कि आप भी एलान करें कि हम ऐसे जानवरों की ज़िन्दगी गुज़ारने पर हरगिज़ राज़ी नहीं जिनको सिर्फ रातिब (राशन) और तहफ़्फुज़ (सुरक्षा) चाहिए, हम हज़ार बार ऐसी ज़िन्दगी गुज़ारने और ऐसी हैसीयत क़बूल करने से इन्कार करते हैं, हम इस सर ज़मीन पर अपनी अज़ानों और नमाज़ों के साथ रहेंगे, बल्कि हम तरावीह और इशराक़ व तहज्जुद अदा करने की आज़ादी को छोड़ने के लिए राज़ी नहीं, हम एक–एक सुन्नत को सीने से लगा कर रहेंगे और रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सीरत को सामने रख कर किसी एक नक्श बल्कि नुक़्ते से भी दस्तबरदार होने के लिए तैयार नहीं।

❖❖❖

रोहंगिया मुसलमान अत्याचार तथा अन्याय के घेरे में

—हुसैन अहमद

बरमा जिस का नाम मयांमार है, बुद्ध बहुसंख्यक वाला देश है, उस का एक बड़ा प्रान्त अराकान है, उसे अब रखाइन कहा जाता है विगत वर्षों में वह एक स्वतंत्र इस्लामिक रियासत थी, जहां मुसलमान बहुसंख्यक थे 1747 ई0 में बरमा के राजा ने आक्रमण करके अपने अधिकार में ले लिया था बरमा और अराकान के बीच समन्दर है अराकान बंगलादेश के शहर चाटगाम से मिला हुआ है, मयांमार में आज कल मुसलमानों की तादाद 22 लाख से अधिक है उनमें से 13 लाख रोहंगिया मुसलमान अराकान में रहते हैं, रोहंगिया किसी जगह का नाम नहीं बल्कि एक नस्ल का नाम है और इस नस्ल की अक्सरीयत मुसलमान है कुछ तादाद हिन्दू भाईयों की भी है, इस्लाम के आरंभिक काल में अरब के कुछ मुसलमान व्यापार के लिए बरमा आए फिर वह यहीं रह गए, इसलिए यहां इस्लाम के चिन्ह 1050 ई0 से पहले ही के मिलते हैं, जब उपमहाद्वीप में अंग्रेजों का शासन हुआ तो खेती के मजदूरों की हैसियत से कुछ बंगाली मुसलमान अराकान भेजे गए, उनमें कुछ आबादी उन मुसलमानों की भी है जो 1857 ई0 के गदर में गिरिफ्तारियों से बचने के लिए बरमा चले गए थे और वह बहादुर शाह ज़फर की जिलावतनी में उनके साथ थे।

रोहंगिया मुसलमानों की ज़बान बंगलादेश के शहर चाटगाम के लोगों से मिलती जुलती है, जिस से शुब्हा होता है कि रोहंगिया मुसलमान चाटगाम के निवासी हैं, बरमा शासन के अत्याचारों से बचने के लिए कुछ रोहंगिया मुसलमान बंगलादेश के दक्खिनी भाग में रह रहे हैं रोहंगिया मुसलमानों की थोड़ी थोड़ी आबादी हिन्दुस्तान पाकिस्तान, मलेशिया और थाईलेण्ड में भी है, अराकान पर बरमा का अधिकार होने के बाद वहां कुछ लोग बरमा से भी आ बसे थे वह बुद्धिष्ट थे यह लोग लगता है रखाइन गोत्र के थे। एक साजिश के तहत इन को यहां लाया गया और इन्हीं के नाम पर अराकान को रखाइन का नाम दिया गया। वह रोहंगिया मुसलमानों से बड़ी घृणा करते हैं, और उनको यह पसन्द नहीं कि अराकान में रोहंगिया मुसलमान बहुसंख्यक में रहें, वह इस उपाए में रहते हैं कि किसी प्रकार रोहंगिया मुसलमानों को यहां से निकाल दिया जाए ताकि इस प्रान्त में रखाइन नस्ल के लोगों का अधिकार हो जाए। और अराकान को मुसलमानों से पाक कर दिया जाए हालांकि 1948 ई0 में अंग्रेजों

से आज़ादी हासिल करने में मुसलमानों ने बौद्धों को पूरा सहयोग दिया था। आज़ादी के बाद अराकान के मुसलमानों ने अराकान को पूर्वी पाकिस्तान में मिलाने की ख्वाहिश जाहिर की थी, लेकिन अंग्रेजों और बौद्ध मजहब वालों ने रुकावट डाली, बरमा की फौजी हुकूमत ने 1982 ई0 में सिटीज़नशिप कानून के तहत रोहंगिया मुसलामानों को अपना शहरी मानने से इन्कार कर दिया और उनको अपने इलाक़े से बाहर जाने से भी रोक दिया। इस कानून के तहत बरमा हुकूमत ने यह तै किया कि मयांमार की शहरियत हासिल करने के लिए यह सिद्ध करना होगा कि वह बरमा में 1823 ई0 से पहले का निवासी है इससे पता चलता है कि बरमा दुन्या का ऐसा मुल्क है जो मजहबी दुशमनी में अपने शहरियों को शहरियत देने से इन्कार करता है, बरमी बुद्धिष्टों के दिमाग में भर दिया गया है कि रोहंगिया मुसलमान बरमा में गैर कानूनी मुहाजिर हैं वहां उनको रहने का हक नहीं है, हालांकि अंग्रेज़ी दौर जो 1948 ई0 तक रहा बरमा में रोहंगिया मुसलमानों और बौद्धों के बीच शरीयत का कोई झगड़ा न था मगर जब 1962 ई0 में जनरल न्यून ने बरमा पर अधिकार जमाया तो उस ने बरमी कौमियत के जज्बात को उभारा, परिणाम स्वरूप शान प्रान्त के अल्पसंख्यक निशाना बने मगर उन्होंने अपने बचाव में हथियार उठा लिए इस प्रकार उग्रता तथा हिंसा का वहां आरंभ हुआ इस बीच 1971 ई0 में चाटगाम के कुछ पहाड़ी बंगालियों ने जब अराकान में पाकिस्तानियों की आपसी लड़ाई के सबब पनाह ली तो रखाइनयों में बे चैनी फैली, उस मौक़े से फाइदा उठाते हुए चाटगाम के आरजी बंगाली मुहाजिरों के साथ दो सौ वर्ष पूर्ण के रोहंगिया निवासियों को भी जोड़ दिया। जनरल न्यून की हुकूमत ने बंगलादेश के मुजीब से मांग की कि अपने बंगलादेशी मुहाजिरों को वापस बुला लें, उस का कहना था कि उन सब बंगाली मुहाजरीन को वापस लें जो बरमी नस्ल के नहीं हैं 1978 ई0 में लगभग 2 लाख मुसलमानों को बंगलादेश में ढ़केल दिया गया बंगलादेशी हुकूमत का कहना था कि उन में से 90 फीसद अराकान के रोहंगियाई मुसलमान हैं, अतः बरमा उन को वापस ले, अक़्वामें मुत्तहिदा की कोशिशों से बरमा इस पर तैयार भी हुआ मगर 1982 ई0 में शहरियत के कानून में तब्दीली कर के बरमा में आजाद 135 नस्ली ग्रूपों से रोहंगिया मुसलमानों को खारिज कर दिया, और वह गैर मुल्की करार दिए गए और उन को रिहाइश, सिहत, और तालीम के हक से महरूम कर दिया गया, अब उन की हालत यह है कि वह सरकारी इजाजत नामे के बिना शादी भी नहीं कर सकते और न दो से अधिक बच्चे पैदा कर सकते हैं इजाज़त नामे के बिना न कोई सम्पत्ति खरीद सकते न बेच सकते हैं न कहीं आ जा

सकते हैं, इस पर सितम यह है कि 2014 ई0 में एक कानून के तहत रोहंगिया की परिभाषा पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया अब हाल यह है कि फौज के संरक्षण में रोहंगिया औरतों का गैंग रैप, औरतों, बच्चों और मर्दों का क़त्ले आम, मसाजिद, स्कूल और घर तबाह किए जा रहे हैं, यह अत्याचार लगता है उस वक्त तक जारी रहेंगे जब तक बरमा में रोहंगिया मुसलमान ज़िन्दा रहेंगे या फिर बरमा छोड़ कर कहीं आर चले जाएंगे, अक्तूबर 2015 ई0 में लनदन की क्युन मेरी यूनिवर्सिटी के कुछ शोधकर्ताओं की रिपोर्ट के अनुकूल हुकूमत मंयामार के संरक्षण में रोहंगिया के मुसलमानों की नस्ल कुशी (वांशिक विनाश) अंतिम चरण में है इस समस्या में कठिनाई यह है कि बरमा हुकूमत की ओर से गैर मुल्की सहाफियों (पत्रकारों) को अराकान जाने की अनुमति नहीं है जिस के कारण वहां की शुद्ध जानकारी प्राप्त करना संभव नहीं है।

ताजा घटना के अनुकूल रोहंगिया मुसलमानों पर आरोप है कि उन्होंने पुलिस चौकी पर हम्ला करके कई पुलिस वालों को मार डाला है, इसके बाद मयांमार हुकूमत ने रोहंगिया मुसलमानों के खिलाफ आप्रेशन शुरु कर दिया है। अक्वामे मुत्तहिदा का कहना है कि 25 अगस्त 2017 ई0 के बाद से रोहंगिया पनाह गुजीनों की बंगलादेश हिजरत में तेजी आई है और लगभग डेढ़ लाख रोहंगियाई मुसलमान अराकान से निकलने पर मजबूर हुए हैं जहां वह पनाह गुजीं कैम्पों में रह कर बुन्यादी सहूलतों से महरूम हैं।

खबर रसां एजेन्सी राइटर के मुताबिक़ हुकूमत बंगलादेश का इल्ज़ाम है कि मयांमार ने सरहद पार करने वाले पनाह गुजीनों की बड़ी तादाद के बावजूद सरहद पर ताज़ा बारूदी सुरंगे नस्ब कर रखी हैं, इन तमाम हालात के बावजूद रोहंगिया मुसलमान खुद को बरमा का मुस्तकिल बाशिंदा कहते हैं और तहफ्फुज़ (सुरक्षा) की जमानत पर अपने मुल्क जाने को तैयार हैं मगर बरमा के साबिक सद्र थीन सीन ने अपने नस्ली एजेण्डे का इज्हार करते हुए एक बयान जारी कर के बरमी मुसलमानों की तशवीश में मजीद इजाफा कर दिया है कि इन मुसलमानों को किसी तीसरे मुल्क में आबाद कर देना चाहिए, इसी बीच बरमा में हाकिमों ने बीती तीन दहाईयों से जनगणना का काम शुरु कर रखा है, लेकिन जनगणना करने वालों को रोहंगिया मुसलमानों को लिखने से रोक रखा है।

कष्ट की बात यह है कि इन तमाम मुआमलात में अम्न की नोबल इनआम याफ्ता आंग सांग सान सूकी बराबर खामोश हैं, यह वही खातून हैं जिन के बाप ने मुसलमानों की मदद से अंग्रेज़ों के खिलाफ आज़ादी की लड़ाई लड़ी और सफलता प्राप्त की थी, हुकूके इन्सानी की पामाली से मुतअल्लिक़ उनका सिर्फ

एक बयान रोहंगियों की ज़िन्दगी को कदरे आसान बना सकता था मगर जब भी उनसे इस बारे में कोई रिपोर्ट पूछता है तो वह गोल मोल जवाब दे कर पल्ला झाड़ लेती हैं। शर्म की बात तो यह है कि वह मुल्क की हक़ीकी लीडर हैं और उन की नाक के ऐन नीचे रोहंगिया मुसलमान जल रहे हैं, मर रहे हैं लेकिन बैनल अक़्वामी मीडिया को वहां जाने की इजाज़त नहीं और मुहतरमा सूकी खामोश तमाशाई बनी हुई हैं, जब कि सख्तगीर शबीह के हामिल जन्रल वर्थ अपनी गिरिफ्त मजबूत करने के लिए दुन्या के सामने खुद को बरमा की बौद्ध आबादी का अस्ल चेहरा छुपाने की कोशिश कर रहे हैं ताकि वह बरमी कौमियत उभार कर आंग सान सूकी के हाथों में मुल्क की अस्ल बागडोर जाने से रोक सकें, वहीं अक़्वामे मुत्तहिदा की इन्सानी हुकूक की नुमाइन्दा खुसूसी बराए मयांमार यां हीली ने मुल्क में रोहंगिया मुसलमानों के खिलाफ होने वाले मजालिम (अत्याचार) की मजम्मत करते हुए मुल्क की रहनुमा आंग सान सूकी को रोहंगिया मुसलमानों की मदद न करने पर तन्क़ीद का निशाना बनाया है मगर उन दोनों के माबैन जारी सियासी कशमकश में मशके सितम तो बेचारे रोहंगिया मुसलमान ही बन रहे हैं, उन पर जुल्म के पहाड़ तोड़े जा रहे हैं कि सिर्फ पांच दिनों के अन्दर 100 किलो मीटर के दाइरे में मुस्लिम आबादी बिलकुल तबाह कर दी गई है। औरतों के साथ दुष्कर्म किया गया और बूढ़े, बच्चों तक को सफ्फाकाना तौर से कत्ल कर दिया गया और यह सिलसिला अभी तक जारी है, अमरीका को इराक़ में खतरनाक हथयार नजर आ गए और इस बहाने उस की ईंट से ईंट बजा दी, अफगानिस्तान में ओसामा बिन लादिन और तालिबान नज़र आ गए, उन्हें मिटाने के नाम पर वहां तबाही मचाई, हीले बहाने से अपने देरीना मुखालिफ मुअम्मर कज़्ज़ाफ़ी को खाक व खून में मिलाने में कोई देर नहीं की, शाम में अपने एजेन्ट आई0एस0एस0 की सरकूबी के बहाने मासूम शहरियों पर बमों की बारिशें कर के खून के दरया बहा दिए मगर बरमा सरकार की सरपरस्ती में फौजी दहशतगर्दी और खूंरेज़ी उसे नज़र नहीं आती? अक्वामे मुत्तहिदा कहां है? उस की खामोशी समझ में नहीं आती, मश्रिकी तैमूर (इन्डोनेशिया से मिली हुई एक छोटी सी रियासत है) पर उसने जिस तरह ऐक्शन लिया, क्या बरमा के हालात ऐसे इक़्दाम के मुताक़ाज़ी नहीं हैं? शायद उस की नज़र में अराकान में जारी तशद्दुद की कोई अहम्मीयत नहीं क्योंकि यहां मश्रिकी तैमूर की तरह ईसाई नहीं बल्कि मुसलमान रहते हैं।

राष्ट्रीय सहारा 17 सितम्बर 2017 से ग्रहीत)

❖❖❖

26 जनवरी

आयी जनवरी 26 आयी
खबर खुशी की लेकर आयी
राष्ट्र ध्वज आओ फहरायें?
राष्ट्रगीत सब मिल कर गायें
आओ मिलकर खुशी मनाएं
अमर रहे भारत हम गायें
आयी जनवरी छब्बीस आयी
खबर खुशी की लेकर आयी
भारत प्यारा जिन्दाबाद
हिन्द हमारा जिन्दाबाद
रचा गया दस्तूर हमारा
लिखा गया दस्तूर हमारा
पढ़ा गया दस्तूर हमारा
जमहूरी दस्तूर हमारा
आयी जनवरी छब्बीस आयी
खबर ख़ुशी की लेकर आयी
भारत प्यारा जिन्दाबाद
हिन्द हमारा जिन्दाबाद
भारत का यह संविधान
दुन्या में है बड़ा महान
इसमें है सबका अधिकार
बूढ़ा बच्चा या हो जवान
आयी जनवरी छब्बीस आयी
खबर खुशी की लेकर आयी
भारत प्यारा जिन्दाबाद
हिन्द हमारा जिन्दाबाद
सवा अरब आबादी है
सबको यां आज़ादी है
हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई
रहते हैं वह जैसे भाई
आयी जनवरी छब्बीस आयी
खबर खुशी की लेकर आयी
भारत प्यारा जिन्दाबाद
हिन्द हमारा जिन्दाबाद
हर मज़हब आजाद है यां
हर कल्चर आजाद है यां
लिखा है यह दस्तूर में
हर कोई आजाद है यां
आयी जनवरी छब्बीस आयी
खबर खुशी की लेकर आयी
भारत प्यारा जिन्दाबाद
हिन्द हमारा जिन्दाबाद
उर्दू, हिन्दी, इंग्लिश बोली
हर बोली महफूज़ है यां
बंग्ला मराठी और गुजराती
हर भाषा महफूज़ है यां
आयी जनवरी छब्बीस आयी
खबर खुशी की लेकर आयी
भारत प्यारा जिन्दाबाद
हिन्द हमारा जिन्दाबाद

उर्दू सीखये —इदारा

हिन्दी जुम्लों की मदद से उर्दू जुम्ले पढ़ये।

बाज जानवरों और चिड़ियों की बोलियां	بعض جانوروں اور چڑیوں کی بولیاں
हाथी चिंघाड़ता है	ہاتھی چنگھاڑتا ہے
शेर दहाड़ता है	شیر دہاڑتا ہے
ऊँट बलबलाता है	اونٹ بلبلاتا ہے
घोड़ा हिनहिनाता है	گھوڑا ہنہناتا ہے
गधा रेंकता है	گدھا رینکتا ہے
गाय रंभाती है	گائے رنبھاتی ہے
बैल डकरता है	بیل ڈکرتا ہے
कुत्ता गुर्राता है	کتّا غرّاتا ہے
कुत्ता भौंकता है	کتّا بھونکتا ہے
कुत्ता रोता है	کتّا روتا ہے
बिल्ली म्याँऊँ म्याँऊँ करती है	بلّی میاؤں میاؤں کرتی ہے
बकरी मेंमें करती है	بکری میں میں کرتی ہے
बकरी मेम्याती है	بکری ممیاتی ہے
कबूतर गुंटुरगूं करता है	کبوتر غٹرغوں کرتا ہے
तोता टें टें करता है	طوطا ٹیں ٹیں کرتا ہے
चिड़िया चूं चूं करती है	چڑیا چوں چوں کرتی ہے
चिड़ियां चहचहाती हैं	چڑیاں چہچہاتی ہیں
बुलबुल चहकता है	بلبل چہکتا ہے
मुर्गी कटकटाती है	مرغی کٹکٹاتی ہے
मुर्गा कुकडूकूं कहता है	مرغا ککڑوکوں کہتا ہے
पपीहा पी कहां कहता है	پپیہا پی کہاں کہتا ہے